स्वस्ति

तृतीयो भागः

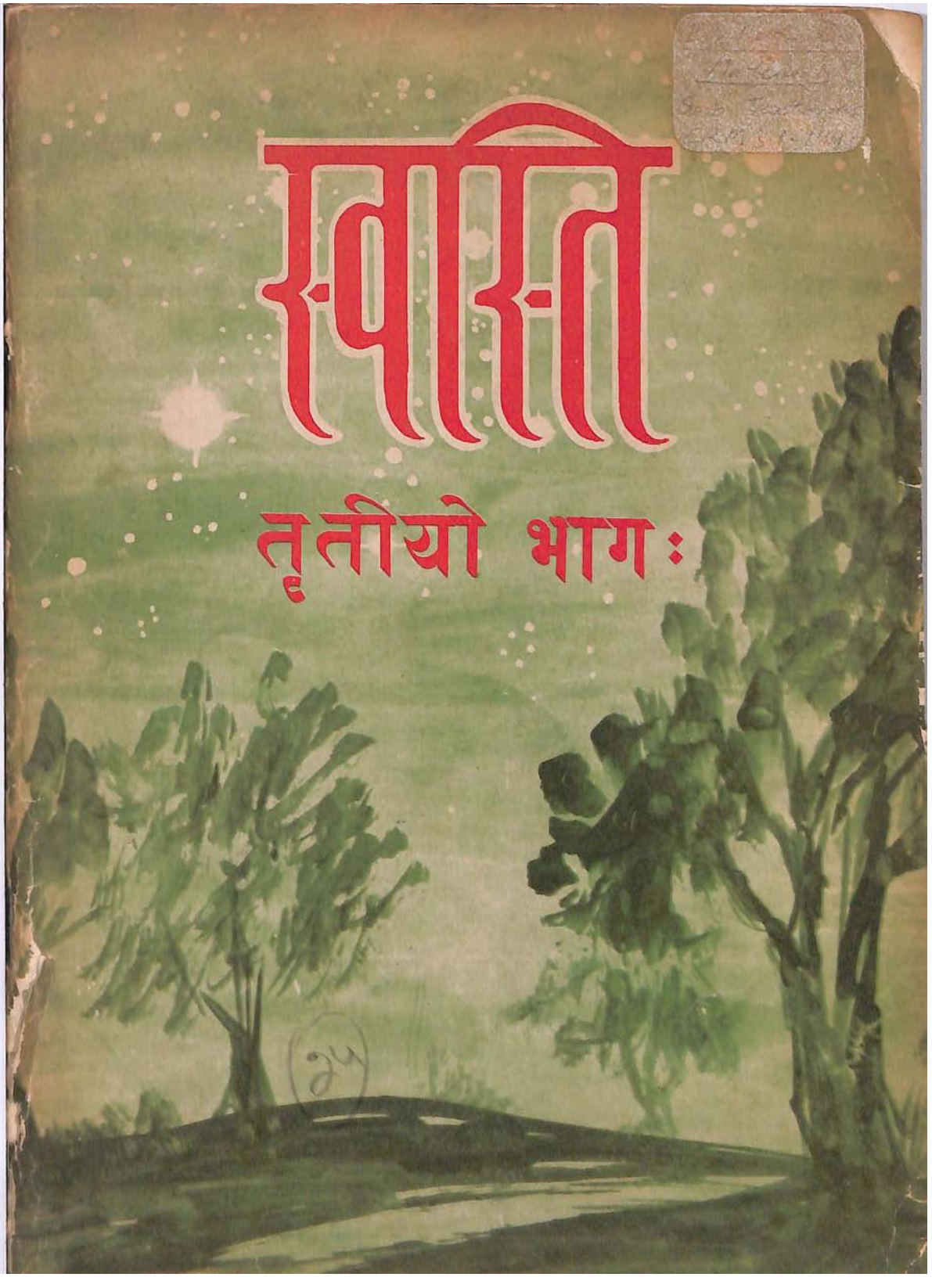

स्वस्ति

तृतीय भागः

NIRANTAR
2021
10 May 2001

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1] **[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा **उन सब में**
व्यक्ति की गरिमा और [2] [राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई0 **को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

51 क. **मूल कर्तव्य** – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय मे संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले।

स्वस्ति

तृतीयो भागः

संस्कृत-पाठ्यपुस्तकम्

सम्पादक

डा० कमला कान्त मिश्र

श्रीमती उर्मिल खुंगर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जून 1980 : ज्येष्ठ 1902

बीसवां पुनर्मुद्रण
दिसंबर 2000 पौष 1922

PD 85T ML

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1980

सर्वाधिकार सुरक्षित

☐ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

☐ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय, या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

☐ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

रु. 21.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एस. पी. ए. प्रिन्टर्स (प्रा.) लि., बी-17/3, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया फेस II, नई दिल्ली 110 020 में मुद्रित।

प्रस्तावना

आस्माकीनशिक्षापद्धतौ संस्कृतमहत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयीयसंस्कृतशिक्षणार्थमुपयुक्तपाठ्यक्रमस्य तदनुरूपपाठ्यपुस्तकानाञ्च विकासकार्यं राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिकविज्ञानमानविकीशिक्षाविभागस्य तत्त्वावधाने निरन्तरमतति । तदन्तर्गतं प्रारम्भिकस्तरे संस्कृतमध्यापयितु नवीनशिक्षायोजनानुसारेण राष्ट्रियः एकः चतुर्वर्षीयः आदर्शपाठ्यक्रमः विकसितः । तदनुसृत्य निर्मितस्य **स्वस्ति**-नाम्नः पाठ्यपुस्तकस्यायं तृतीयो भागः । आशास्ति यदिदं पुस्तकं संस्कृतभाषाज्ञानेन साकं छात्रेषु राष्ट्रिय-सांस्कृतिक-चेतनोदयं नैतिकसामाजिकमूल्यविकासञ्च सम्पादयितुं सहायकं भविष्यति । पुस्तकं सरलं रोचकं छात्रोपयोगि च कारयितुं यथासम्भवः प्रयासो विहितः । प्रयासोऽयं कियान् सफलः इति संस्कृताध्येतृभिरन्तेवासिभिः अनुभवसम्पन्नैरध्यापकैः सुविज्ञशिक्षाविद्भिश्चैव निर्णेष्यते ।

पाण्डुलिपिनिर्माणतत्समीक्षणसंशोधनादिविविधकार्येषु कृतश्रमः संस्कृतप्रवाचकः डा० कमलाकान्तमिश्रः प्रभूतं साधुवादमर्हति । मुद्रणप्रतिलिपिनिर्माणप्रूफसंशोधनादि प्रकाशनकार्येषु सहयोगशीला खुगरोपाधियुक्ता श्रीमती उर्मिलाख्यापि धन्यवादार्हा ।

पुस्तकस्य योजनानिर्माणे, पुनर्विलोकने प्रकाशने च समये समये अपेक्षितं परामर्शादिकं प्रदानाय प्रो० अनिलविद्याङ्कारमहोदयाः, डा० मा० गो० चतुर्वेदिनश्च अस्माकं धन्यवादार्हाः ।

पाठ्यपुस्तकस्यास्य निर्माणे यैः विषयविशेषज्ञैः संस्कृताध्यापकैश्च बहुमूल्यं परामर्शादिकं प्रदत्तं, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति । "बालसंस्कृतम्" संस्कृतपत्रिकातः "प्रयत्नो विधेयः" इति पाठः सधन्यवादं गृहीतः । पुस्तकं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कारयितुम् अनुभविनां शिक्षकाणां विशेषज्ञानां च परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः भवेयुः ।

नवदेहली
3. 6. 1980 खृ०

शिवकुमारमिश्रः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

आमुख

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतञ्चैव संस्कृतिः

यह सुभाषित संस्कृत भाषा की महत्ता को समुचित रूप से प्रकट करता है। इतना ही नहीं भाषाओं की विविधता से युक्त इस विशाल भूभाग में एकता का संचार करने वाला प्रबल सूत्र संस्कृत ही रही है। भारत की अधिकांश आधुनिक भाषाओं में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य यह द्योतित करता है कि ये भाषाएं चिरकाल से अपने विकास में संस्कृत से अनुप्राणित होती रही हैं। वेद-उपनिषद, पुराण आदि ग्रन्थों में संचित हमारे पूर्वजों की अमूल्य ज्ञाननिधि इसी भाषा के माध्यम से हमें उपलब्ध हो सकती है जिसकी उपादेयता आज भी अक्षुण्ण बनी है। अतः भारतीय संस्कृति के उत्तरोत्तर विकास एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए संस्कृत का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

उपर्युक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालयीय स्तर पर संस्कृत पठन-पाठन के लिए एक चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम विकसित कर प्रस्तुत पुस्तक '**स्वस्ति**' (सु+अस्ति अर्थात् सुन्दर अस्तित्वमय) की रचना की गई है जो वस्तुतः छात्र जगत् के लिए सर्वथा कल्याणकारिणी एवं उपादेय सिद्ध हो सकती है। इसके प्रथम तीन भागों में संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना मुख्य लक्ष्य माना गया है तथा चौथे भाग में छात्रों को संस्कृत साहित्य का परिचय देना अभीष्ट है। प्रस्तुत पुस्तक इसी श्रृंखला की तीसरी कड़ी है।

स्वस्ति भाग—3

इस पुस्तक के विकास में कथ्यचयन, स्तरीकरण एवं प्रस्तुतीकरण आदि के आधारभूत सिद्धान्तों का अनुसरण कर पाठों का क्रम एवं उनकी संख्या आदि का निर्धारण किया गया है। पुस्तक को यथासंभव सरल, रोचक एवं छात्रोपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। इसके लिए इसमें लघु निबन्ध, सरल संवाद, नाटकीय दृश्य, गेय पद्य, आकर्षक कथा, सुन्दर एवं शिक्षाप्रद श्लोक, भक्त, बालक, महिला एवं महापुरुषों के जीवनचरित आदि विविध रोचक पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की गई है। संस्कृत अध्यापन की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर पाठों का संयोजन किया गया है।

पुस्तक में केवल 24 पाठ हैं, जिनमें 18 गद्य और 6 पद्य के हैं। भाषा के अध्यापन को सुगम बनाया जा सके, एतदर्थ गद्य पाठों के विकास में पाठ्यक्रम में निर्धारित व्याकरण-बिन्दुओं को आधार बनाया गया है किन्तु पद्य पाठ इस दृष्टि से मुक्त है। पाठानुसार व्याकरण बिन्दु इस प्रकार है-

पाठ-1	अकरान्त पुं० शब्द,	पाठ-2	इकारान्त पुं० शब्द,
पाठ-3	अव्यय शब्द,	पाठ-5	कारक परिचय,
पाठ-6	ऋकारान्त पुं० स्त्री० शब्द,	पाठ-7	सन्धि-विच्छेद,
पाठ-9	उकारान्त नपुं०,	पाठ-10	क्त, क्तवतु, शतृ, शानच् प्रत्यय,
पाठ-11	उकारान्त पुं०,	पाठ-12	व्यंजनान्त पुं०, आत्मनेपद क्रिया,
पाठ-14	सर्वनाम अदस्, (असौ और अमी) आत्मनेपद,	पाठ-15	इकारान्त नपुं०,
पाठ-17	उकारान्त पुं० शब्द,	पाठ-18	इकरान्त स्त्री०,
पाठ-19	कारक-परिचय,	पाठ-21	स्त्री-प्रत्यय (आ, ई),
पाठ-22	संख्यावाचक शब्द,	पाठ-23	आत्मनेपद क्रिया तथा व्यञ्जनान्त नपुं० शब्द।

भाषा ज्ञान के साथ-साथ छात्रों में यह पुस्तक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत कर सके, इस दृष्टि से पाठों के विषय विभिन्न राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों तथा नैतिक आदर्शों पर आधारित हैं। ये मूल्य निम्नांकित हैं :—दया (पाठ-2), दानशीलता (पाठ-3 व 13), उद्यमशीलता (पाठ-4) कर्तव्यनिष्ठा एवं मानवीय उदारता (पाठ-6), सत्य (पाठ-10), अस्पृश्यता-निवारण एवं सामाजिक समता (पाठ-11), कर्म का महत्त्व (पाठ-12), आत्मसम्मान एवं दृढ़ संकल्प (पाठ-14), धैर्य एवं अध्यवसाय (पाठ-15), आत्मविश्वास एवं चारित्रिक विकास आदि (पाठ-16), उदारता (पाठ-17), संगठन शक्ति (पाठ-18), परोपकार (पाठ-19), नारी चरित्र की उदात्तता (पाठ-20), सांस्कृतिक चेतना (पाठ-23) एवं विश्वमानवतावाद (पाठ-24)।

निवेदन

शिक्षक बन्धुओं से

पाठ्य-पुस्तक के उद्देश्य की पूर्ति बहुत कुछ शिक्षकों की कुशलता एवं अभिरुचि पर निर्भर करती है। इनके अभाव में सर्वथा उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक भी व्यर्थ सिद्ध हो सकती है, किन्तु एक योग्य एवं कुशल भाषाशिक्षक पाठ्य-पुस्तक के अभाव में भी छात्रों को समुचित ज्ञान करा सकता है। अतः संस्कृत के अध्यापन में शिक्षक-बन्धुओं का विशेष दायित्व है। यह दायित्व ऋषि-मुनि परम्परा द्वारा निरंतर निर्वाहित होकर वर्तमान विद्यालयों के शिक्षक बन्धुओं पर आया है। इस पुस्तक के अध्यापन के समय जिन बिन्दुओं पर आपका ध्यान देना अपेक्षित है, वे निम्नांकित हैं—

1. गद्य पाठों में समाविष्ट व्याकरण बिन्दुओं को पाठ का मुख्य अंश मानकर किया गया अध्यापन भाषा ज्ञान के लिए लाभप्रद हो सकता है।

2. पाठों में निहित नैतिक शिक्षा के तत्त्वों एवं राष्ट्रीय तथा सामाजिक मूल्यों से छात्रों को परिचित करायें। पाठों को पढ़ते पढ़ाते समय विशद चर्चा द्वारा उन्हें इन मूल्यों को जीवन में स्वीकार करने की प्रेरणा दें।
3. अर्थग्रहण एवं अन्य योग्यताओं के विकास के लिए पाठों के अंत में दिए गए शब्दार्थ एवं अभ्यास का समुचित उपयोग किया जाए।
4. पद्य पाठों को पढ़ाते समय श्लोकों का सस्वर वाचन, यति एवं विराम आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वैयक्तिक वाचन के अतिरिक्त वर्ग में इनका सामूहिक गायन भी लाभप्रद हो सकता है।
5. गद्य पाठों को पढ़ाते समय भी उच्चारण की शुद्धता के लिए इनका मुखर वाचन कराना चाहिए।
6. संवाद एवं नाटकीय दृश्य रूप में आये पाठों का अभिनय छात्रों की रुचि एवं विद्यालय में उपलब्ध साधनों के अनुसार किया जा सकता है।

छात्रों से

आपकी यह पाठ्य-पुस्तक इतनी सरल संस्कृत में लिखी गई है कि इसके बहुत से पाठ आप स्वयं पढ़कर समझ सकेंगे। जहाँ कहीं नये एवं कठिन शब्द आये हैं, उनका अर्थ उसी पाठ के अंत में दे दिया गया है जिसे देखकर आप उस पाठ को शिक्षक के बिना भी पढ़कर समझ सकते हैं। यदि किसी शब्द का अर्थ पाठ के अंत में दिए शब्दार्थ में नहीं मिले तो उसका ज्ञान आप परिशिष्ट में दिए गये शब्दकोश से आसानी से कर सकते हैं।

प्रत्येक पाठ में शब्दार्थ के बाद अभ्यास प्रश्न दिए गये हैं। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आप उस पाठ को पुनः पढ़ें। इससे आप उन प्रश्नों का शुद्ध तथा समुचित उत्तर आसानी से दे सकेंगे। यदि किसी प्रश्न का उत्तर आप स्वयं नहीं खोज पायें तो उनके विषय में अपने शिक्षक एवं अभिभावक से पूछ-ताछ करें।

इस प्रकार यह पुस्तक आपके लिए बहुत ही सरल और ज्ञानप्रद सिद्ध होगी।

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
प्रस्तावना		v
आमुख		vii
पाठाः		
वन्दना		1
प्रथमः पाठः	मम विद्यालयः	3
द्वितीयः पाठः	वाल्मीकेः रामायणम्	6
तृतीयः पाठः	दानवीरः कर्णः	9
चतुर्थः पाठः	प्रयत्नो विधेयः (श्लोकाः)	13
पञ्चमः पाठः	ग्राम्यजीवनम्	15
षष्ठः पाठः	कर्तव्यपरायणा बालिका	18
सप्तमः पाठः	को धन्यः	21
अष्टमः पाठः	सुभाषितानि (श्लोकाः)	24
नवमः पाठः	ऋतुः वसन्तः	28
दशमः पाठः	का तावद् वस्तुतो माता	31
एकादशः पाठः	औदार्यं हि महात्मनाम्	35
द्वादशः पाठः	गीतामृतम् (श्लोकाः)	38
त्रयोदशः पाठः	सञ्चितार्थोऽपि नश्यति	41
चतुर्दशः पाठः	बालको ध्रुवः	44
पञ्चदशः पाठः	कृषकः	50
षोडशः पाठः	मधुबिन्दवः (श्लोकाः)	54
सप्तदशः पाठः	रघोः उदारता	56
अष्टादशः पाठः	शक्तिमहिमा	62
एकोनविंशः पाठः	शिवाः आपः सन्तु	66
विंशः पाठः	अशोकवाटिकायां सीता (श्लोकाः)	69
एकविंशः पाठः	आजादः चन्द्रशेखरः	72
द्वाविंशः पाठः	सुहृत्संलापः	76
त्रयोविंशः पाठः	जगद्गुरुः शङ्करः	79
चतुर्विंशः पाठः	संस्कृतवाणी (श्लोकाः)	83
परिशिष्टम्	शब्दकोशः	

वन्दना

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भावार्थ

मित्र (देवता) हमारे लिए कल्याणकारी हों, वरुण (देवता) हमारे लिए कल्याणकारी हों। सूर्य (देवता) हमारे लिए कल्याणकारी हों। देवताओं के स्वामी इन्द्र (देवता) हमारे लिए कल्याणकारी हों। वे विष्णु देवता हमारे लिए कल्याणकारी हों जिन्होंने वामनावतार के समय बहुत लम्बे-लम्बे डग भरे थे। ब्रह्म को (मेरा) नमस्कार (अर्पित है)। हे वायु, आप

को मेरा नमस्कार (अर्पित है)। आप ही साक्षात् ब्रह्म हैं। (मैं) आप ही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। (मैं) आप ही को ऋत (शाश्वत नियम) कहूँगा। (मैं) आपही को सत्य कहूँगा। आप मेरी रक्षा कीजिए। जो भी आपकी स्तुति करे उसकी रक्षा कीजिए। (मैं आपकी स्तुति करता हूँ, अतः) आप मेरी रक्षा कीजिए। वक्ता (स्तुतिकर्ता) की रक्षा कीजिए।

सर्वत्र शान्ति स्थापित हो ॥

प्रथमः पाठः

मम विद्यालयः

एष मम विद्यालयः । अयं मम गृहस्य समीपे वर्तते । अत्र सुदूरात् अपि केचित् बालकाः आगच्छन्ति । अस्य प्रधानाचार्यः सुयोग्यः अनुशासनप्रियः चास्ति । अन्येऽपि अध्यापकाः स्व-स्व-विषये निष्णाताः । ते छात्रान् स्नेहेन पाठयन्ति । अत्र एकः भव्यः समृद्धः च पुस्तकालयः अस्ति, यत्र बालकाः प्रतिदिनं वाचनाय पुस्तकानि समाचारपत्राणि च लभन्ते । विद्यालयेऽस्मिन् व्यायामशिक्षकः अपि अस्ति । मम विद्यालयस्य क्रीडाक्षेत्रम् अतिविशालं वर्तते । वयं प्रतिदिनं होरा-पर्यन्तं तत्र क्रीडामः । तत्र समये समये क्रीडाप्रतियोगिताः अपि भवन्ति । विद्यालये रमणीयम् एकम् उद्यानं विद्यते, यत्र वयं प्रातः सायं च भ्रमणाय गच्छामः ।

विद्यालयस्य समीपे एकः तडागः वर्तते । प्रतिदिनं जलविहाराय वयं तत्र गच्छामः चिरं स्नानं कृत्वानन्दं चानुभवामः । विद्यालये एका विज्ञानप्रयोग-शालापि वर्तते । तत्र प्रयोगेण छात्राः विज्ञानसिद्धान्तान् अवगच्छन्ति । विद्यालयस्य परिसरे जलपानगृहम् अस्ति । तत्र मध्यावकाशे गत्वा छात्राः स्वादूनि वस्तूनि खादन्ति पिबन्ति च पेयानि ।

मम विद्यालयस्य परिसरः शान्तिपूर्णः प्रकृत्या मनोहरः चास्ति । अयं विद्यालयः नितरां प्रसिद्धः । अस्य परीक्षाफलं प्रशंसनीयं भवति । अत्राध्ययने वयं गौरवम् अनुभवामः ।

शब्दार्थ

निष्णाताः	निपुण, पटु, माहिर ।
होरा	घंटा ।
नितराम्	बहुत (अव्यय) ।
विज्ञानप्रयोगशाला	लेबोरेटरी ।
प्रयोगेण	प्रयोग के द्वारा ।
विज्ञानसिद्धान्तान्	विज्ञान के सिद्धान्तों को ।
अवगच्छन्ति	जानते हैं ।
परिसरे	प्राङ्गण में, मैदान में ।
मध्यावकाशे	मध्य के अवकाश में, रिसेस में ।
स्वादूनि	स्वादिष्ट, जायकेदार ।
पेयानि	पीने के योग्य वस्तु (चाय, शरबत आदि) ।
प्रकृत्या	प्रकृति से, कुदरत से ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) पुस्तकालये छात्राः पठितुं किं किं लभन्ते ?
(ख) उद्याने वयं कदा कदा गच्छामः ?

(ग) प्रयोगशालायां प्रयोगेण छात्राः किम् अवगच्छन्ति ?

2. निम्नलिखित पदों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

अध्यापकाः, छात्रान्, विद्यालयात्, विद्यते ।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) ·····रमणीयम् एकम् उद्यानम् अपि वर्तते ।
(ख) ·····समीपे एकः क्रीडातडागः वर्तते ।
(ग) वयं·····विद्याम् अधिगच्छामः ।
(घ) अन्येऽपि·····स्व-स्व-विषये निष्णाताः ।
(ङ) प्रतिदिनं वयं तडागे····· गच्छामः ।

4. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

चास्ति, पुस्तकालयः, कृत्वानन्दम्, मध्यावकाशे, अत्राध्ययने ।

5. इस पाठ में से पाँच अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द चुनकर लिखिए ।

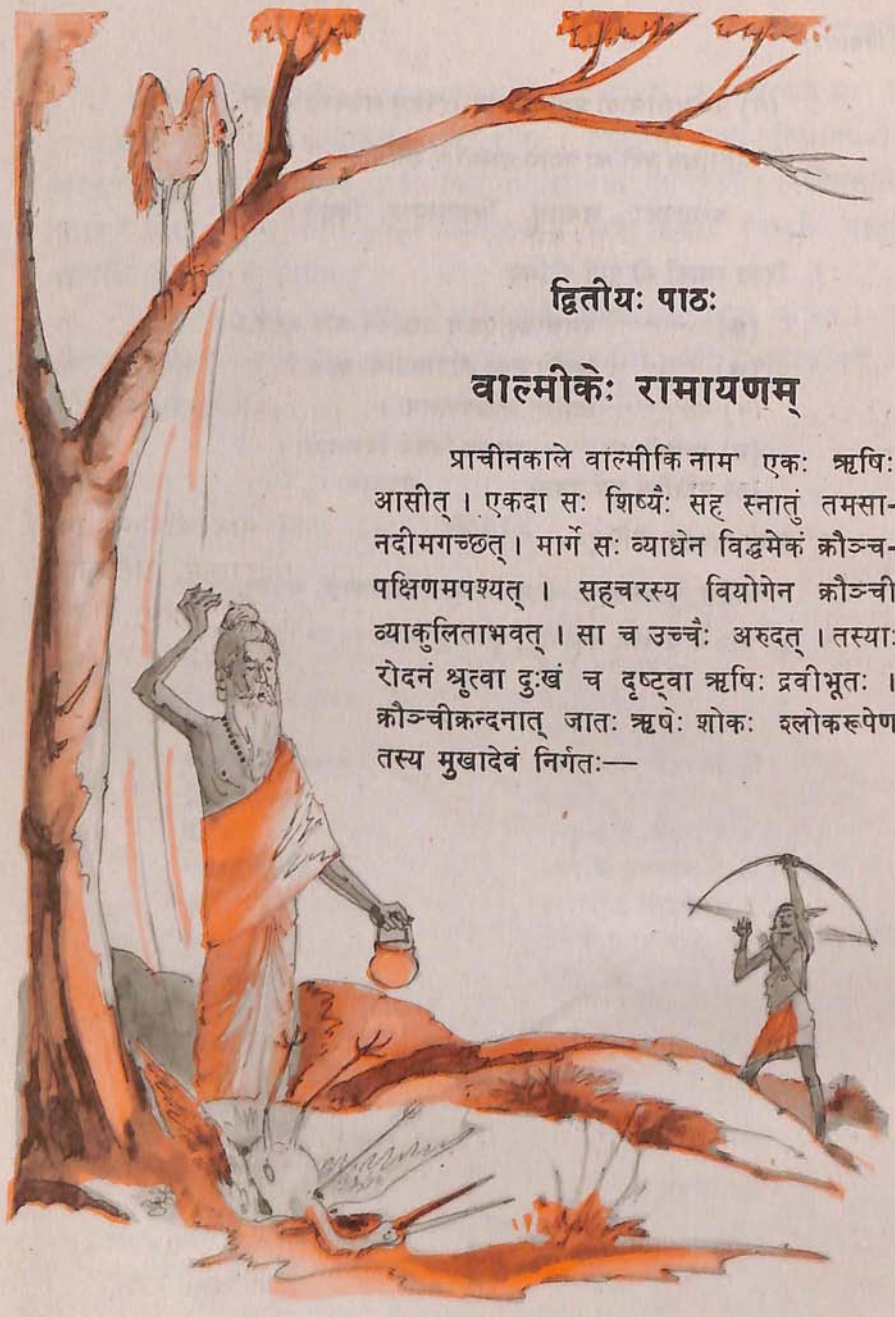

द्वितीयः पाठः

वाल्मीकेः रामायणम्

प्राचीनकाले वाल्मीकि नाम एकः ऋषिः आसीत् । एकदा सः शिष्यैः सह स्नातुं तमसा-नदीमगच्छत् । मार्गे सः व्याधेन विद्धमेकं क्रौञ्च-पक्षिणमपश्यत् । सहचरस्य वियोगेन क्रौञ्ची व्याकुलिताभवत् । सा च उच्चैः अरुदत् । तस्याः रोदनं श्रुत्वा दुःखं च दृष्ट्वा ऋषिः द्रवीभूतः । क्रौञ्चीक्रन्दनात् जातः ऋषेः शोकः श्लोकरूपेण तस्य मुखादेवं निर्गतः—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

अयमेव श्लोकः लौकिकसाहित्यस्य प्रथमा काव्यरचना । ततः प्रभृति ऋषिरयं कवित्वं प्राप्तः । ऋषेः कवित्वं विज्ञाय विधिः आकाशवाण्या आदेशम् अयच्छत्—"भो मुने ! लिख रामायणं काव्यम् । तत्र च रामचरितं वर्णय, येन भगवतः रामस्य पुण्यं चरित्रं विदित्वा लोकाः सन्मार्गस्य अनुसरणं कुर्युः" । विधेः आदेशानुसारेण अनेन मुनिना श्लोकबद्धा रामायणी कथा लिखिता । सा चेदानीं वाल्मीकि-रामायणनाम्ना प्रसिद्धिमुपगता ।

अत्र कविना तादृशानि तथ्यानि लिखितानि यानि मानवजीवनस्य पथ-प्रदर्शकानि सन्ति । अस्मिन् काव्ये वाल्मीकिना पितुः आज्ञापालनं, भ्रातृस्नेहः, परोपकारः, दयादाक्षिण्यं, दीनरक्षा इत्यादीनि मानवतायाः पोषकाणि जीवन-मूल्यानि वर्णितानि सन्ति, येनायं कविः, तदीयो ग्रन्थश्च आदर्शभूतौ जातौ ।

शब्दार्थ

क्रौञ्चपक्षिणम्	हंस पक्षी को ।
क्रन्दनात्	विलाप से ।
क्रौञ्ची	हंसी ।
लौकिकसाहित्यस्य	लौकिक संस्कृत साहित्य की ।
विज्ञाय	जानकर ।
विदित्वा	जानकर ।
दाक्षिण्यम्	उदारता, कुशलता, अनुकूलता ।
जीवनमूल्यानि	आदर्श जीवन के मूल्य(जीवन को मूल्यवान बनानेवाली बातें) ।

श्लोकार्थ

व्याध, तुम्हें सुखसमृद्धि और कीर्ति कभी नहीं मिलेगी, क्योंकि तुमने हंस के जोड़े में से एक (हंस) को जो काममोहित था, मार दिया है।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) का उच्चैः अरुदत् ?
   (ख) कस्य आदेशानुसारेण वाल्मीकिना रामायणी कथा लिखिता ?
   (ग) लोकभाषायां रामचरितं क. अलिखत् ?

2. कोष्ठ में सही या गलत लिखिए—

   (क) संस्कृतस्य आदिकविः कालिदासः आसीत्। ( )
   (ख) व्याधेन क्रौञ्ची विद्धा। ( )
   (ग) महर्षि वाल्मीकि रामचरितवर्णनाय विधिः अकथयत्। ( )
   (घ) रामायणे गद्यबद्धा रामकथा वर्तते। ( )

3. (क) इस पाठ में आये हुए इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों को चुनकर लिखिए।
   (ख) कवे, ऋषिः, मुने—इन शब्दों का प्रयोग संस्कृत वाक्यों में कीजिए।
   (ग) पाठ में आए हुए श्लोक को कण्ठस्थ कीजिए।
   (घ) सन्धि-विच्छेद कीजिए—
   आदेशानुसारेण, इत्यादीनि, व्याकुलिताभवत्, चेदानीम्।

तृतीयः पाठः

दानवीरः कर्णः

(ततः प्रविशति ब्राह्मणवेषधारी शक्र)

शक्रः भो कर्ण ! महत्तरां भिक्षां याचे ।

कर्णः भगवन् ! कर्णोऽहं भवन्तं नमस्करोमि । आज्ञापय किमिच्छसि किं ददामि ।

शक्रः महत्तरां भिक्षां याचे ।

कर्णः महत्तरां भिक्षां भवते प्रदास्ये । गोसहस्रं ददामि ।

शक्रः मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि । नेच्छामि कर्ण !

कर्णः किं नेच्छति भवान् ? वाजिनां बहुसहस्रं ते ददामि ।

शक्रः मुहूर्तकमारोहामि । नेच्छामि कर्ण ! नेच्छामि ।

कर्णः एतत् वारणानां वृन्दं ददामि ।

शक्रः एतदपि नेच्छामि ।

कर्णः अन्यदपि श्रूयताम् । अपर्याप्तं कनकं ददामि ।

शक्रः गृहीत्वा गच्छामि । (गत्वा पुनरागत्य च) नेच्छामि कर्ण ! नेच्छामि ।

कर्णः तेन हि जित्वा पृथ्वीं ददामि ।

शक्रः पृथिव्याः किं करिष्यामि ?

कर्णः तेन हि मच्छिरो ददामि ।

शक्रः अविहा ! अविहा !

कर्णः न भेतव्यम्, न भेतव्यम् । प्रसीदतु भवान् । अन्यदपि श्रूयताम्—
भगवते यदि रुचितं स्यात् कुण्डलाभ्यां सह कवचं ददामि ।

शक्रः (सहर्षम्) ददातु, ददातु ।

कर्णः (आत्मगतम्) एषः एवास्य कामः । (प्रकाशम्) गृह्यताम् ।

शल्यराजः अङ्गराज ! न दातव्यम्, न दातव्यम् ।

कर्णः शल्यराज ! अलम् अलं वारयितुम् ।

पश्य—

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्
सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः ।
जलं जलस्थानगतं च शुष्यति
हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति ॥

तस्मात् गृह्यताम् । (निवृत्य ददाति)

(भासकृत कर्णभार से उद्धृत)

शब्दार्थ

शक्रः	इन्द्र ।
महत्तराम्	बहुत बड़ी (ऐसी भिक्षा जो अब तक न माँगी गई हो) ।
मुहूर्तकम्	कुछ देर, क्षण भर ।
वाजिनाम्	घोड़ों का ।
वारणानाम्	हाथियों का ।
वृन्दम्	समूह ।
अपर्याप्तम्	जरूरत से ज्यादा, आवश्यकता से अधिक, बहुत अधिक ।
गृहीत्वा	लेकर ।
आगत्य	आकर ।
जित्वा	जीतकर ।
अविहा	नहीं, नहीं, ऐसा मत करो (निषेध बोधक अव्यय) ।
भेतव्यम्	डरना चाहिए ।
प्रसीदतु	प्रसन्न हों ।
आत्मगतम्	मन ही मन ।
कामः	इच्छा ।
प्रकाशम्	प्रकट ।
अङ्गराज	कर्ण (अङ्ग देश का राजा) (संबोधन) ।
अलम् अलम् वारयितुम्	मत रोको, मत रोको, रोकना बेकार है ।
शुष्यति	सूख जाता है ।
निवृत्य	लौटकर ।
कालपर्ययात्	समय बीतने पर, समय बीतने से ।
सुबद्धमूला	बहुत मजबूत जड़ वाले ।
हुतम्	हवन किया हुआ ।
कनकम्	सुवर्ण ।
पादपः	वृक्ष ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) शक्रः कस्य नाम अस्ति ?

   (ख) कर्णः प्रथमं किं दातुमिच्छति ?

   (ग) शक्रः किं याचितुम् इच्छति ?

   (घ) कालपर्ययात् का क्षयं गच्छति ?

   (ङ) किं किं तथैव तिष्ठति ?

2. इस पाठ से पाँच अव्ययों को चुनकर उनका संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए –

   नेच्छति, एतदपि, मच्छिरः, तथैव।

4. कर्ण के विषय में पाँच वाक्य संस्कृत में लिखिए।

चतुर्थः पाठः

प्रयत्नो विधेयः

प्रयत्नेन कार्ये सुसिद्धिर्जनानाम्,
प्रयत्नेन सद्बुद्धिवृद्धिर्जनानाम् ।
प्रयत्नेन युद्धे जयः स्याज्जनानाम्,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥ 1 ॥

प्रयत्नेन धीराः समुद्रं तरन्ति,
प्रयत्नेन वीराः गिरीन् लङ्घयन्ति
प्रयत्नेन विज्ञाः वियत्युत्पतन्ति,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥ 2 ॥

कठोरः प्रयत्नान्मृदुत्वं प्रयाति,
प्रयत्नादसाध्यं भवत्येव साध्यम् ।
प्रयत्नादयोग्याः सुयोग्या भवन्ति,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥ 3 ॥

प्रयत्नेन मुक्तिं श्रिताः भारतीयाः,
प्रयत्नेन ऋद्धिं गताः भारतीयाः ।
प्रयत्नेन विश्वप्रियाः भारतीयाः,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥ 4 ॥

शब्दार्थ

विधेयः	करना चाहिए।
धीरा :	धैर्यशाली व्यक्ति।
विज्ञा :	बुद्धिमान्।
वियति	आकाश में।
उत्पतन्ति	उड़ते हैं।
मृदुत्वम्	कोमलता।
असाध्यम्	कठिन।
मुक्तिम्	स्वतन्त्रता को।
सिद्धिम्	सम्पन्नता को।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

   (क) प्रयत्नेन ..... सुसिद्धिर्जनानाम्।
   (ख) ..... धीराः समुद्रं तरन्ति।
   (ग) प्रयत्नेन वीरा : .....।
   (घ) प्रयत्नेन ..... भारतीयाः।

2. निम्नलिखित शब्दों को एकवचन में बदलिए—
   (उदाहरण—जनानाम्—जनस्य)

   देवानाम्, वीराः, गिरीन्, विश्वप्रियाः, विज्ञाः।

3. प्रयत्न के महत्त्व पर संस्कृत में चार वाक्य लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

   कठोरः, साध्यम्, जयः, सद्बुद्धिः, धीराः।

पञ्चमः पाठः

ग्राम्य जीवनम्

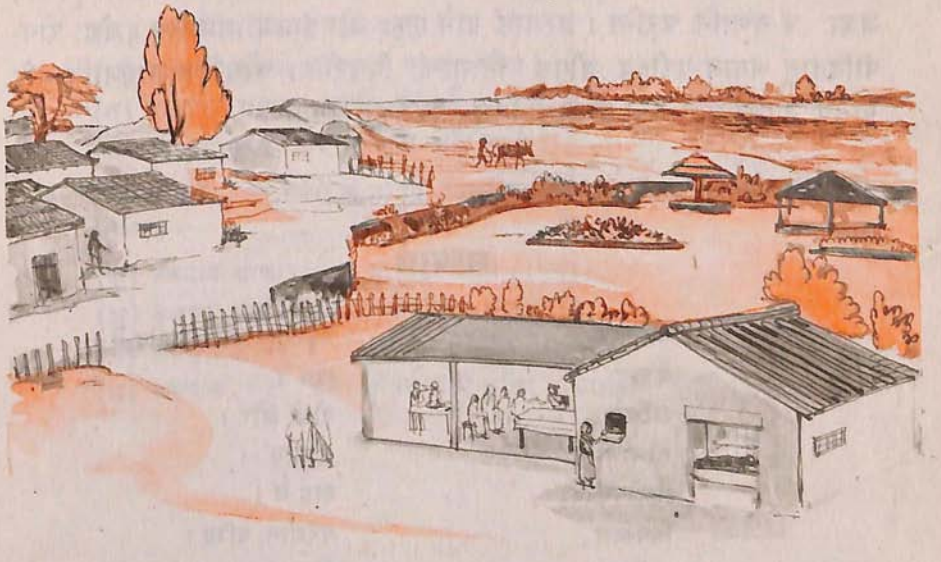

अस्माकं ग्रामः नगरात् नातिदूरे वर्तते । ग्रामम् अभितः तस्य सोमानौ भूत्वा द्वे नद्यौ प्रवहतः । ते च कदाचिद् ग्रामं धान्यैः सम्पन्नं, कदाचित् जलोपप्लवैः विपन्नं कुरुतः ।

ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति । ते च प्रातरारभ्य सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति । क्षेत्राणि परितः वारिणा पूर्णाः कुल्याः सन्ति । कृषकाः क्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति, कुल्याजलेन तानि सिञ्चन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति च । ते च गृहाणि परितः शाकादीन्यपि रोपयन्ति । परिश्रमशीलाः ग्रामीणाः धान्यादिकमुत्पादयन्ति । वैज्ञानिकोपकरणानां साहाय्येन कृषिव्यवसायः लाभप्रदः सञ्जातः ।

अस्माकं ग्रामे एकैव रथ्या । रथ्यामुभयतः क्वचिद् गृहाणि क्वचित् च केदाराः शोभन्ते । अत्र द्वौ प्राथमिकविद्यालयौ, एकः माध्यमिकविद्यालयः च

सन्ति । उच्चविद्यालयः तु अत्र नास्ति । नानाप्रकारैः वृक्षैः विराजमानाः आरामाः सन्ति। तत्र बालकाः क्रीडन्ति ।

ग्रामं सर्वतः गोचारणभूमिः अपि विद्यते । तत्र धेनवः, वत्साः, वृषभाः, अजाः च तृणानि चरन्ति । अस्माकं ग्रामे एकः औषधालयः अप्यस्ति । वैद्यः रोग-पीडितान् जनान् परीक्ष्य औषधं निःशुल्कं वितरति । आधुनिक-साधनानि यदि ग्रामेषु उपलब्धानि तर्हि ग्राम्यजीवनम् आदर्शभूतं स्यात् ।

शब्दार्थ

नातिदूरे	बहुत दूर नहीं, समीप में ।
केदारः	खेत ।
अभितः	दोनों ओर ।
सीमानौ	सीमाएँ ।
जलोपप्लवैः	बाढ़ से ।
विपन्नम्	परेशान, दरिद्र ।
कृषीवलः	किसान ।
कुल्या	नहर ।
वपन्ति	बोते हैं ।
आरामाः	बाग-बगीचे ।
गोचारणभूमिः	चरागाह ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) अस्माकं ग्रामः कुत्र वर्तते ?
(ख) नद्यौ कथं ग्रामं सम्पन्नं विपन्नं वा कुरुतः ?
(ग) कृषकाः क्षेत्रेषु किं किं कर्म कुर्वन्ति ?

(घ) रथ्यामुभयतः किं किं विद्यते ?
(ङ) ग्रामे धेनवः वृषभाः च किं चरन्ति ?
(च) कः रोगपीडितान् परीक्ष्य औषधं वितरति ?

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) ग्रामस्य अभितः द्वे नद्यौ वहतः ।
(घ) क्षेत्राणां परितः वारिपूर्णाः कुल्याः सन्ति ।
(ग) रथ्यायाः उभयतः गृहाणि शोभन्ते ।
(घ) ग्रामस्य सर्वतः गोचारणभूमिः अपि वर्तते ?

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) अस्माकं ग्रामः····· नातिदूरे वर्तते । (नगर)
(ख) कृषकाः क्षेत्राणि·····कर्षन्ति । (हल)
(ग) कृषकाः क्षेत्रेषु·····वपन्ति । (बीज)
(घ) अस्माकं·····एकः औषधालयः अस्ति । (ग्राम)

षष्ठः पाठः

कर्तव्यपरायणा बालिका

ऋतुः हेमन्तः। प्रभाता वेला। शैत्यं संवर्धयन् शीतः वायुः प्रवहति स्म। सर्वेऽपि कम्बलेन आवृताः शय्यामवलम्बन्ते स्म। सहसा दूरात् मधुरः परञ्च शैत्यप्रभावात् प्रकम्पमानः ध्वनिः श्रोत्रमार्गमुपगतः — "कमनीयानि कुसुमानि, सुगन्धीनि कुसुमानि, कस्मै रोचन्ते ? को वा क्रेतुमिच्छति ?" इति।

शनैः शनैः स ध्वनिः मम समीपे एव श्रुतिगोचरः जातः। कम्बलाद्बहिः मुखमानीय गवाक्षेण अहमपश्यम् — काचिद् बालिका मम गृहाङ्गणे रम्भापत्र-रचितं पुष्पभाजनं वहन्ती स्थितास्तीति। सा च मां दृष्ट्वा — "प्रभो, कमनीयानीमानि पुष्पाणि मूल्यदानेन स्वीकुर्वन्तु भवन्तः" इति प्रार्थयत।

"बालिके, शीतेऽस्मिन् समये कथं त्वं गृहाद् बहिः भ्रमसि, शैत्यं च सहसे ?" इत्यहमपृच्छम्। सा शनैः-शनैः स्वां शोकार्द्रां कथाम् अकथयत्—

"प्रभो, वयं दरिद्राः । अहं मात्रा पित्रा भ्रातृभ्यां च सह रथ्यायाः पार्श्वे वसामि । मम पितरौ रोगाक्रान्तौ शय्यावलम्बिनौ भवतः । ज्येष्ठभ्राता पङ्गुः मूकश्च । अनुजश्च बालः । ह्यः रात्रौ अस्माभिः न किमपि भक्षितम् । प्रभाते भोजनाय न किञ्चिदस्ति गृहे । एतेषां कुसुमानां विक्रयेण यद्धनं लप्स्यते, तेन पित्रोः भात्रोः मम च भोजनाय किञ्चित् क्रेतुमिच्छामि । दीनाः वयं कथंकथमपि शैत्यं सहामहे" इति ।

अहमचिन्तयम्—"अहो, दारिद्र्यं किं न कारयति ? इयं बालिका कथं शैत्यं सहिष्यते, तस्याः पितरौ भ्रातरौ वा कथं सहिष्येते ? भ्रातरि, पितरि, ज्येष्ठे भ्रातरि चास्याः भक्तिः प्रशंसामर्हति" । एवं विचिन्त्याहं कुसुमानि सर्वाण्यपि गृहीत्वा तस्यै दश रुप्यकाणि कानिचित् वस्त्राणि च अयच्छम् । सा विस्मयेन मम मुखं विलोकयन्ती अतिष्ठत् । अहं तामाश्वासयन् अवदम्—"गृहाण सर्वमेतत्, गृहं च गच्छ । मातरं पितरं भ्रातरौ आत्मानं चाहारेण सन्तोषय । इमानि च वस्त्राणि पित्रे मात्रे भ्रातृभ्यां च प्रयच्छ । तेन तव पितरौ भ्रातरौ च शैत्यात् मुक्ताः भविष्यन्ति ।

सा रूप्यकाणि वस्त्रा . च गृहीत्वा कृतज्ञतापूर्णाभ्यां नेत्राभ्यां मां विलोकयन्ती अगच्छत् ।

शब्दार्थ

हेमन्तः	मार्गशीर्ष और पौष मास में आने वाली ऋतु का नाम ।
आवृताः	(कम्बल) ओढ़े ।
श्रुतिगोचरः जातः	सुनाई पड़ा ।
गवाक्षेण	खिड़की से ।
रम्भापत्ररचितम्	केले के पत्तों का बना हुआ ।
पुष्पभाजनम्	फूल रखने का पात्र, दोना ।
शोकार्द्रां कथां	दुःख दायिनी कथा, करुण कहानी ।
ह्यः	कल (बीता हुआ) ।
विचिन्त्य	सोचकर

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए–

(क) को ध्वनि. श्रुतिमार्गमुपगतः ?
(ख) बालिका कीदृशीं कथाम् अकथयत् ?
(ग) सा किं विक्रीणीते स्म ?
(घ) बालिकायाः ज्येष्ठः भ्राता कीदृश आसीत् ?
(ङ) सः बालिकायै किम् अयच्छत् ?

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों को शुद्ध कीजिए—

(क) भ्राता वनं गच्छन्ति ।
(ख) दातारः धनं यच्छति ।
(ग) पितुः नमः ।
(घ) भ्रातरं नमः ।
(ङ) पितायां मम विश्वासः अस्ति ।

3. निम्नलिखित पदों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

पितरौ, मातरि, भ्रातृभ्याम्, सहसा, अयच्छम् ।

4. इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

सप्तमः पाठः

को धन्यः

एकदा कश्चिद् नृपतिः स्वसचिवम् अवादीत् — "हे विद्वन् !

इहामुत्र च को धन्यः को धन्योऽत्रैव प्रेत्य नो ।

को धन्यः प्रेत्य नैवात्र नो धन्यश्चोभयत्र कः ॥

इति मम चत्वारः प्रश्नाः सन्ति । मासाभ्यन्तरे भवान् एतेषामुत्तरं दातुमर्हति । इयं भवतः योग्यतायाः परीक्षा । अन्यथा मन्त्रिपदं न शक्ष्यति भवान् अलङ्कर्तुम् ।"

सः मन्त्री बुद्धिमान् आसीत् । अन्यस्मिन्नेव दिने सः चतुरः पुरुषान् राज्ञः पुरस्तात् उपस्थापयत् । तेषु प्रथमः धर्मात्मा श्रेष्ठी, द्वितीयः कृपणो धनाढ्यः, तृतीयः तपोधनः साधुः, चतुर्थश्च कश्चित् निषादो व्याधः आसीत् ।

राजा—(सभां प्रविश्य) मन्त्रिवर्य ! किमर्थमुपस्थापिता भवता एते जनाः ?
(जयतु देवः इत्युच्चार्य सर्वे प्रणमन्ति ।)

मन्त्री—अत्र भवतः चत्वारः प्रश्नाः सन्ति । तेषां समाधानार्थं मयैते, चत्वारः पुरुषाः आनीताः ।

राजा—ननु कथमिव ।

मन्त्री—इहामुत्र च को धन्यः ? इति भवतः प्रथमः प्रश्नः । तस्य समाधानार्थमेषः धर्मात्मा श्रेष्ठी मयानीतः । अस्य विपुलं सत्कर्मार्जितं धनमस्ति । अयम् औदार्येण पात्रेभ्यः ददातीति प्रेत्यापि दत्तस्य भूरि फलं लप्स्यते । सोऽयमिहामुत्र च धन्यः ।

राजा—कस्तावदयं द्वितीयः ।

मन्त्री—महाराज । द्वितीयोऽयं कृपणः श्रेष्ठी, यो धन्योऽत्रैव, प्रेत्य नो । धनाढ्यः सन्नपि अयं दानं न करोतीति अन्यस्मिन् लोके धन्यो न भविष्यति ।

राजा—कस्तावत् तृतीयोऽयम् ?

मन्त्री—राजन् । तृतीयोऽयं तपोधनः साधुः, एष इह धनानि परित्यज्य केवलं तपः एव आचरति । अतः प्रेत्य एवासौ धन्यः, नात्र । यतः तत्रैवायं तपःफलानि लप्स्यते, भविष्यति च धन्यः ।

राजा—ननु कोऽयं चतुर्थः ।

मन्त्री—देव ! कश्चित् निषादो व्याधः । अयम् उभयत्रापि अधन्यः, दरिद्रोऽयमत्र । प्राणिवधं कृत्वा कुटुम्बं पालयति । न कदापि किमपि पुण्यमाचरतीति न प्रेत्यापि लप्स्यते पुण्यफलम् ।

इत्थं च जटिलानां प्रश्नानां सोदाहरणम् उत्तरं लब्ध्वा स राजा सभ्याश्चापि सर्वे परमां मुदमवाप्नुवन् । तुष्टो राजा मन्त्रिणं धनेन मानेन च पुरस्कृत्य सभां व्यसृजत् ।

शब्दार्थ

इह	यहाँ, इस लोक में।
अमुत्र	वहाँ (परलोक में)।
प्रेत्य	मरकर, परलोक जाकर।
पुरस्तात्	आगे।
अत्रभवतः	आपके (यह सम्मान में किया गया प्रयोग है)।
भूरि	बहुत।
व्यसृजत्	छोड़ दिया।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) अत्र लोके कः धन्यः ?

   (ख) परलोके कः धन्यः ?

   (ग) इहामुत्र च कः धन्यः ?

   (घ) उभयत्र को न धन्यः ?

2. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

   कश्चित्, इहामुत्र, धनाढ्यः, मर्यते, तत्रैवायम्।

3. सन्धि कीजिए—

   मास+अभ्यन्तरे, अन्यस्मिन्+एव, इति+उच्चार्य, कः+तावत्, तृतीयः+अयम्।

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

   उभयत्र, अन्यथा, विपुलम्, आनीताः, धन्यः।

अष्टमः पाठः

सुभाषितानि

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ 1 ॥

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥ 2 ॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ 3 ॥

धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते
बलेन किं यश्च रिपून् न बाधते ।
श्रुतेन किं यो न च धर्ममाचरेत्
किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत् ॥ 4 ॥

शब्दार्थ

जाड्यम्	जड़ता, मूर्खता ।
धियः	बुद्धि की ।
वाचि	वाणी में ।
मानोन्नतिम्	सम्मान में उत्तरोत्तर वृद्धि को ।
दिशति	दिशा दिखाती है ।
अपाकरोति	दूर करती है ।
गुह्यम्	रहस्य, राज़ ।
पुंसाम्	व्यक्तियों के ।
आपद्गतम्	आपत्ति में पड़े हुए को ।
जहाति	छोड़ता है ।
युगान्तरे	दूसरे युग में, बहुत देर से ।
न्याय्यात् पथः	न्याययुक्त मार्ग से ।
अश्नुते	खाता है ।
समाविशतु	आवे ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) सत्सङ्गतिः पुसां किं किं करोति ?

(ख) सन्मित्रस्य किं लक्षणम् ?

(ग) के न्याय्यात् पथः न प्रविचलन्ति ?

2. कोष्ठकों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सत्सङ्गतिः धियः·····हरति। (जाड्यम्/विवृत्ताम्)

(ख) सत्सङ्गतिः दिक्षु·····तनोति । (निन्दाम्/कीर्तिम्)

(ग) धीराः····· पथः पदं न प्रविचलन्ति । (न्याय्यात्/अन्यायात्)

(घ) सन्मित्रं·····निवारयति । (धर्मात्/पापात्)

(ङ) धनं·····सफलम् । (कार्पण्येन/दानेन)

3. इनको वर्तमान काल (लट्) में बदलिए—

निन्दन्तु, गच्छतु, अस्तु, स्तुवन्तु ।

4. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) **मानोन्नतिं, नाश्नुते, परोपकारः, अद्यैव ।**

(ख) इनमें सन्धि कीजिए—

पापात्+निवारयति, सत्+मित्रलक्षणम्, यथा+इष्टम्, जित+इन्द्रियः ।

(ग) इन्हें मिलाकर लिखिए—

पापम्+अपाकरोति, किम्+आत्मना,
मरणम्+अस्तु, धर्मम्+आचरेत् ।

5. प्रथम श्लोक का भावार्थ हिन्दी में लिखिए ।

नवमः पाठः

ऋतुः वसन्तः

समागतः वसन्तः ।

स्वागतं ते ऋतुराज ! त्वमेव कुसुमाकरः । तवागमने भवति पुष्पाणां विकासः, सौरभाणां च प्रसारः । अतः तव आगमनं सर्वान् जनान् आनन्दयति, निखिलान्प्राणिनः प्रीणयति, चराचरम् च रमयति । इदानीं जडता विलीयते, मलिनता अपगता भवति, स्वच्छता एव दृश्यते परितः ।

पश्यतु मनाक् निर्मलम् आकाशम् । स्वच्छाः दिशः प्रसन्ना इव भान्ति अद्य । सर्वत्र तडागेषु नदीषु कुल्यासु सरःसु च राजते विमलं वारि । क्वचित् मुकुलितानि अपरत्र प्रफुल्लितानि कमलवनानि । विकसितानां पङ्कजानांशोभा कस्य मनो न हरति ।

वनेषु, वाटिकासु, उद्यानेषु च नानावर्णानि पुष्पाणि शोभन्ते । पुष्पाणामुपरि गुञ्जन्ति भ्रमराः । ते च प्रियाभिः सह सानन्दं मधूनि पिबन्ति, मधुना मत्तः पिको मधुरं कूजति, तदीयं ध्वनिं बालकाः अनुकुर्वन्ति । वृक्षेषु नवपल्लवाः विराजन्ते । आम्रेषु मञ्जर्यः संलग्नाः कुसुमितं सहकारमाश्रित्य लता प्रमुदिता । रसाले संगता लता लोकानां मनांसि हरति । पक्षिणां कलकूजनमपि सर्वेषां सुखदं भवति ।

अद्यत्वे मधुनः आधिक्यम्; पुष्पेषु मधूनि भवन्ति, मञ्जरीषु च भवन्ति मधूनि, मधुने लोलुपाः चञ्चरीकाः यदा प्रमादं कुर्वन्ति तदा तेषां पक्षाः संसक्ताः भवन्ति, मधुना संश्लिष्टतया ते कदाचित् उड्डयितुं न पारयन्ति; तथापि मधुनि तादृशः स्वादः भवति येन ते ततो न विरमन्ति, अपि तु अनवरतं तत्र स्वानुरागं प्रकटयन्ति ।

सर्षपः पीतं वसनं दधानः प्रकटयति वासन्तिकं विलासम् । पुष्पेभ्यः सौरभं वारिभ्यः शीतलतां चादाय प्रवाति मन्दः पवनः । पवनेन आन्दोलिता मन्दं मन्दं कम्पमाना लता नर्तकीव नृत्यन्ती प्रतीयते ।

अस्मिन् समये प्रमुदिताः सर्वे जनाः समूहं रचयित्वा प्रकृतिशोभां पश्यन्तः भ्रमन्ति । उद्यानेषु, वाटिकासु, नदीतटेषु च क्वचित् गायन्ति लोकाः । अपरत्र नृत्यन्ति कूर्दन्ति च बालकाः । न केवलं मानवाः एव अपि तु पशवः पक्षिणः चापि प्रमुदिताः भवन्ति वसन्ते ।

शब्दार्थ

कुसुमाकरः	फूलों का भण्डार, वसन्त ऋतु ।
प्रीणयति	प्रसन्न करता है ।
जडता	सर्दी ।
विलीयते	मिट गई है ।
परितः	चारों ओर ।

मनाक्	थोड़ा ।
कुल्यासु	नहरों में ।
मुकुलितानि	बिना खिले हुए ।
पिकः	कोयल ।
चञ्चरीकाः	भौंरे ।
प्रमादम्	असावधानी ।
पक्षाः	पंख ।
संश्लिष्टतया	चिपक जाने से ।
वसनम्	वस्त्र ।
आन्दोलिता	हिलती हुई ।

अभ्यास

1 संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) वसन्तस्य पर्यायवाचकाः शब्दाः के ?

(ख) वसन्ते आकाशः कीदृशो भवति ?

(ग) वसन्ते कः मधुरं कूजति ?

(घ) पिकस्य ध्वनिं के अनुकुर्वन्ति ?

(ङ) कम्पमाना लता कीदृशी प्रतीयते ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वारिणा परिपूरिते तडागे.....शोभन्ते ।

(ख) वृक्षेषु .....विराजन्ते ।

(ग) अद्यत्वे मधुना ..... ।

(घ) .... च भवन्ति मधूनि ।

(ङ) प्रवाति .....पवनः ।

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) वारिना तडागः परिपूर्ण : अस्ति ।
(ख) नदीषु वारयः वहन्ति ।
(ग) वारिम् विना प्राणिनः जीवितुं न शक्नुवन्ति ।

4. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति 'मधु' शब्द का प्रयोग करते हुए कीजिए—

(क) अहम् प्रतिदिनम् ..... खादामि ।
(ख) रोगी ..... सह औषधं खादति ।
(ग) ..... स्वादः मधुरः भवति ।
(घ) ..... बहवः गुणाः सन्ति ।

निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—
सु+आगतम्, तव+आगमने, नर्तकी+इव ।

दशमः पाठः

का तावद् वस्तुतो माता

अद्य न्यायालयः तथा जनैः सङ्कुलः यथा नेतः पूर्वं कदापि दृष्टः। द्वाभ्यामपि वाक्कीलाभ्यां सह द्वे नार्यौ न्यायाधीशस्य निर्णयं श्रोतुम् उत्कण्ठिते अग्रिमायां पङ्क्तौ स्थिते आस्ताम्। तयोः एका चित्रा द्वितीया च विचित्रा। एकादशवादनसमये न्यायाधीशः स्वलिखितं निर्णयं श्रावयितुम् उत्थितः। स उच्चैः उक्तवान्—"साक्षिणां वचनानि मया सम्यग्विचारितानि। इमौ विधिशास्त्रविशारदौ वाक्कीलौ अपि स्वपक्षसमर्थनाय यान् यान् तर्कान् प्रस्तुतवन्तौ ते अपि मया विचिन्तिताः। अनया चित्रया उपस्थापितानि प्रमाणानि यथा सत्यानि प्रतीतानि भवन्ति तथैव विचित्रया न्यायालये न्यस्तानि सर्वाणि प्रमाणपत्राण्यपि अकाट्यानि ज्ञातानि भवन्ति। अयं च द्विवर्षकल्पो बालः

मणिदीपः द्वयोरपि मात्रोः अङ्काय स्पृहयति। अतः असौ कस्याः पुत्र इति निर्णेतुमसमर्थेन मया निर्धारितम्—अस्य बालस्य समानं भागद्वयं विधातव्यम्, एको भागः मणिः चित्रायै देयः द्वितीयश्च दीपनामा भागः विचित्रायै अर्पितव्यः" इति।

किञ्चित् विरम्य स भूयो भाषितवान्—"गतमासे एवमेव सन्दिग्धायां स्थितौ उपस्थितायाम् एकं भवनं मया द्विधा विभज्य द्वाभ्यां सहोदराभ्यां दत्तम्। तावपि आत्मानम् एकस्य सम्पूर्णस्य भवनस्याधिकारिणं घोषयन्तौ तथैव विवदमानौ न्यायालयमागतौ यथा इमे चित्रा विचित्रा च मणिदीपम्, 'अयं मम पुत्रः, अयं मम पुत्रः' इति ख्यापयन्त्यौ मिथः विवदमाने न्यायालयम् आगते" इति। निर्णयं श्रुत्वा विचित्रा प्रसन्ना जाता, किन्तु चित्रा मूर्च्छिता भूमौ छिन्नमूला लतेव अपतत्। बहुभिः उपचारैः लब्धचेतना सा करौ मुकुलीकृत्य रुदती प्रार्थयत न्यायाधीशम्—"श्रीमन्। अहं मणिदीपस्य केशच्छेदमपि सोढुं समर्था नास्मि। याचे भवन्तम् अस्य जीवनम्। दीयताम् अयं विचित्रायै। तस्याः पुत्र एव भूत्वा शतं जीवतु अयम्" इति।

क्षणं तूष्णीकः न्यायाधीशः, पुनर्घोषितवान्—"मया साम्प्रतं सत्यम् उपलब्धम्। चित्रा एवास्य वस्तुतो माता। सा यां स्वाभाविकीं निःस्वार्थां ममतां दर्शितवती तया निश्चितः भवति—मणिदीपः अस्याः एव पुत्रः। मूर्च्छा एव तस्याः सत्यतायाः साक्षिणी। अथ तथाविधं निर्णयं श्रुतवत्याः विचित्रायाः मुखे आगतः प्रसादस्तां मायाविनीं साधयति"।

न्यायाधीशस्य बुद्धिवैभवं भूरि भूरि प्रशंसन्तः जनाः प्रमुदिताः जाताः। चित्रा च हृतप्रायं जीवनदीपं मणिदीपं पुनः प्राप्य तथैव प्रहृष्टा यथा कोऽपि अन्धः सहसा नेत्रे लब्ध्वा हृष्यति।

शब्दार्थ

सङ्कुलः	भरा हुआ, व्याप्त ।
नेतः पूर्वम्	इससे पहले नहीं।
वाक्कीलाभ्यां सह	वकीलों के साथ ।
अग्रिमायां पङ्क्तौ	आगे की पंक्ति में ।
अकाट्यानि	जिनका खण्डन न किया जा सके ।
स्पृहयति	चाहता है ।
द्विवर्षकल्पः बालः	दो वर्ष का बालक ।
विधातव्यम्	कर दें, करना चाहिए ।
भूयः	फिर, पुनः ।
ख्यापयन्त्यौ	बतलाती हुई ।
मुकुलीकृत्य	जोड़कर, कली की तरह बनाकर ।
तूष्णीकः	चुप ।
मूर्च्छा	बेहोशी ।
हृष्यति	प्रसन्न होता है ।
दर्शितवती	दिखायी ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) बालकस्य किं नाम आसीत् ?
(ख) न्यायाधीशः प्रथमं भागं कस्यै दातुम् आज्ञप्तवान् ?
(ग) वस्तुतः मणिदीपः कस्याः पुत्रः आसीत् ?
(घ) निर्णयं श्रुत्वा जनैः कस्य प्रशंसा कृता ?

2. निम्नलिखित में ठीक पद पर सही (√) चिह्न लगाइए—

(क) प्रथमं निर्णयं श्रुत्वा चित्रा मूर्च्छिता / प्रसन्ना जाता ।
(ख) द्वितीयं निर्णयं श्रुत्वा विचित्रा म्लानमुखी / प्रसन्नमुखी भूत्वा गृहं गता ।

(ग) चित्रा / विचित्रा एवास्य वस्तुतो माता।
(घ) मणिः चित्रायै / विचित्रायै देयः।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) अस्य बालस्य समानं भागद्वयम् ..... ।
(ख) मणिदीपं लब्ध्वा चित्रा तथैव प्रहृष्टा यथा कोऽपि..... नेत्रे लब्ध्वा हृष्यति।
(ग) मणिदीपः द्वयोः अपि मात्रोः.....स्पृहयति।
(घ) मूर्च्छा एव तस्याः सत्यतायाः..... ।

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखाङ्कित पदों को नमूने के अनुसार बदलिए—

नमूना—बालकः अगच्छत्→बालकः गतवान्।
(क) रामः गीतम् अशृणोत्।
(ख) अहम् जलम् अपिबम्।
(ग) सः भूयः अभाषत।
(घ) त्वम् नाटकम् अपश्यः।

5. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से संस्कृत में वाक्य बनाइए—
दृष्टः, उत्थितः, दत्तम्, आगतः, लिखितम्।

एकादशः पाठः

औदार्यं हि महात्मनाम्

अस्ति कस्यचित् शिवालयस्य समीपे काचिद् वसतिः। तत्र कोऽपि आनन्दो नाम हरिजनबालः अवसत्। एकदा केचन साधवः तत्रागच्छन्। ते इतस्ततः विश्रामस्थानमपृच्छन्। तेषामन्तिकं सहसा आनन्दः आगच्छत् सविनयमवदत् च—"भो साधवः! इयं हरिजनवसतिः, अस्माकं हरिजनानां गृहे यूयम् निवासं करिष्यथ किम्?" इति। साधुषु एकः अकथयत्—"नैवं वद, नास्माभिः जातिः पृष्टा, निवासस्थानं प्रार्थितो भवान्" आनन्दोऽवदत्—"यद्येवं तर्हि स्वागतं भवताम्, आगच्छन्तु भवन्तः, पवित्रं कुर्वन्तु मम गृहम्" इति। स सोत्साहं तेषां सत्कारमकरोत्।

साधवः प्रातः आनन्दम् आहूय आज्ञापयन्—"वयम् इह अपरिचिताः, त्वयैव सह मन्दिरे शिवस्य पूजां करिष्यामः। पूजार्थं पुष्पाणि, बिल्व-पत्राणि, जलम् इक्षून् च आनय" इति। त्वरितमेव आनन्दः सर्वाणि पूजोपकरणानि आनयत। आनन्देन सह शिवालयं गत्वा शिवम् अपूजयन्। शिवस्य पूजया प्रीतः

आनन्दः साधूनाम् औदार्यं प्रतिगृहम् अवर्णयत् । तच्छ्रुत्वा प्रसन्ना ग्रामवासिनः साधून् उपगम्य प्रणम्य च कृतज्ञतां विज्ञापितवन्तः । साधवश्च तान् एवम् उपादिशन्—"अयि ग्रामवासिनः ! अलं कृतज्ञताज्ञापनेन । भवन्तस्तु अस्माकं भ्रातरः एव । इन्दोः भानोश्च किरणाः सर्वत्र समं पतन्ति । उक्तं च—

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।"

शब्दार्थ

वसतिः	बस्ती, गाँव ।
आहूय	बुलाकर ।
इक्षून्	गन्ना, ईख ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) आनन्दस्य गृहं कुत्र आसीत् ?
(ख) आनन्दः केषाम् अन्तिकम् अगच्छत् ?
(ग) साधुभिः सह आनन्दः कम् अपूजयत् ?
(घ) आनन्दः साधुभ्यः किम् आनयत् ?
(ङ) आनन्दः किमर्थम् मन्दिरम गच्छत् ?

2. जो शुद्ध हो उस पर सही (√) चिह्न लगाइए—

(क) एकदा केचन साधवः / साधवाः तत्र आगच्छन् ।
(ख) तेषु साधुषु / साधुसु एकः अकथयत् ।
(ग) साधुस्य / साधोः औदार्यं दृष्ट्वा ग्रामवासिनः कृतज्ञतां विज्ञापितवन्तः ।
(घ) साधुणा / साधुना सह आनन्दः मन्दिरम् अगच्छत् ।
(ङ) साधुनां / साधूनाम उपदेशेन आनन्दः लोकप्रियः अभवत् ।

3. कोष्ठक में दिये गये शब्दों में उचित विभक्तियाँ लगाकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) .....रसः मधुरः भवति। (इक्षु)

(ख) .....पूर्वस्यां दिशायाम् उदेति। (भानु)

(ग) रात्रौ आकाशः.....विभाति। (इन्दु)

(घ) .....दर्शनं पुण्यम्। (साधु)

4. इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है, लिखिए।

द्वादशः पाठः

गीतामृतम्

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ 1 ॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ 2 ॥

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ 3 ॥

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ 4 ॥

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥ 5 ॥

शब्दार्थ

इतरः	दूसरा ।
लोकः	लोग ।
ग्लानिः	हानि, ह्रास ।
अभ्युत्थानम्	वृद्धि ।
दुर्निग्रहम्	कठिनाई से नियन्त्रण में आने वाला
चलम्	चंचल, अस्थिर ।
अभिरतः	संलग्न, प्रवृत्त ।
प्रवृत्तिः	उत्पत्ति, चेष्टा ।
भूतानाम्	प्राणियों की ।
विन्दति	प्राप्त करता है ।

टिप्पणी—उपर्युक्त श्लोक श्रीमद्भगवद्गीता से संगृहीत हैं जिनकी संख्या है—
3/21, 4/7, 6/35, 18/45, 18/46

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) मनः कीदृशम् अस्ति ?

(ख) मनः केन गृह्यते ?

(ग) नरः कथं संसिद्धिं लभते ?

(घ) मानवः सिद्धिं कथं विन्दति ?

2. प्रथम, तृतीय एवं पञ्चम श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

3. निम्नलिखित पदों में सन्धि कीजिए—

कर्मणि+अभिरतः	तत्+तत्+एव+इतरः
तत्+शृणु	सृजामि+अहम्
यत्+यत्+आचरति	तदा+आत्मानम्।

त्रयोदशः पाठः

सञ्चितार्थोऽपि नश्यति

आसीत् धारानगर्यां भोजो नाम राजा। जन्मनैव बुद्धिमान् सुयोग्येभ्यः गुरुभ्यः अधीत्य सः शीघ्रं विद्वान् अभवत्। सिंहासनम् अधिष्ठितः सः सुप्रबन्धेन स्वराज्यं समृद्धम् अकरोत्। तस्य राज्ये जनाः सदाचारिणः आसन्। राज्ञः प्रेरणया गुणानुरागिभिः धनवद्भिः अनेके विद्यालयाः पुस्तकालयाश्च स्थापिताः। कलाविद्भिः शिल्पिभिः भव्यानि भवनानि, रम्याणि मन्दिराणि च निर्मितानि। तस्य राज्ये विद्यार्थिनः विद्याभ्यासं, विद्वांसः अध्यापनं, सङ्गीतज्ञाः सङ्गीतैः जनानां मनोरञ्जनं कुर्वन्ति स्म। स राजा स्थाने स्थाने यात्रिभ्यः कूपान्, रोगिभ्यः चिकित्सालयान्, श्रान्तेभ्यः पथिकेभ्यः धर्मशालाः निर्मापितवान्। समाजे संन्यासिनः धर्मस्य त्यागस्य च महिमानं प्रसारयन्ति स्म। तस्य शासने दुराचारिभ्यः कस्यापि किमपि भयं नासीत्। तत्र विद्यावतां मानः, भगवतः ध्यानं च जीवनस्य लक्ष्यमभवत्। तेषाम् आत्मनि निष्ठा परमात्मनि विश्वासः च दृढौ आस्ताम्। धनिनः विपत्तौ निर्धनानां साहाय्यं कुर्वन्ति स्म। सकलाऽपि राज्यव्यवस्था प्रजायाः श्रेयसे अभवत्। भोजः एतादृशः गुणग्राही आसीत् यत् यः कोऽपि विद्वान् राजसदसि स्वकीयां कवितां, नवीनम् आविष्कारं वा प्रस्तौति स्म तस्मै भूयांसं पुरस्कारम् अयच्छत्।

एकदा भोजस्य दानशीलतां दृष्ट्वा तस्य मन्त्री, अचिन्तयत्—एवं नक्तं दिवं धनस्य व्ययेन तु कोशः क्षयं गमिष्यति। साक्षात् निवेदनेन कदाचित् राजा मह्यं क्रुध्येत् इति। अतः श्लोकपादं लिखित्वा मन्त्री पत्रमेकं राज्ञः पर्यङ्के अस्थापयत्—

"आपदर्थं धनं रक्षेत्"

राजा पर्यङ्के स्थितं तत्पत्रं पठित्वा तस्याग्रे अलिखत्—

"श्रीमतामापदः कुतः"।

मन्त्री दिवा तदुत्तरं पठित्वा पुनरलिखत्—

"कदाचित् चलिता लक्ष्मीः" ।

अग्रिमायां निशायां राजा तत् पठित्वा श्लोकमेवम् अपूरयत्—

"सञ्चितार्थोऽपि नश्यति" ।

एतत् पठित्वा भोजस्य औदार्येण प्रभावितः मन्त्री राज्ये तदनुकूलामेव व्यवस्थामकरोत् ।

शब्दार्थ

जन्मनैव	जन्म से ही ।
श्रान्तेभ्यः पथिकेभ्यः	थके हुए पथिकों के लिए ।
निष्ठा	विश्वास ।

श्रेयसे	कल्याण के लिए।
भूयांसम्	बहुत, अधिक।
नक्तं दिवम्	रातदिन।
पर्यङ्के	पलंग पर।
आपदर्थं	आपत्ति (के निवारण) के लिए, विपदा से बचने के लिए।
अग्रिमायाम् निशायाम्	अगली रात में।
सञ्चितार्थः	जमा किया गया धन।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) भोजो नाम राजा कुत्र आसीत् ?

   (ख) तस्य राज्ये जनाः कीदृशाः आसन् ?

   (ग) तत्र धनिनः केषां साहाय्यं कुर्वन्ति स्म ?

   (घ) भोजस्य दानशीलतां विलोक्य मन्त्री किम् अचिन्तयत् ?

2. नीचे दिए हुए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

   आत्मनि, सदाचारिणः, परमात्मनि, धनम्, यात्रिभ्यः।

3. नीचे लिखे गए बहुवचन के पदों को एकवचन में बदलिए—

   सदाचारिणः, सदाचारिणाम्, श्रीमताम्, रोगिभ्यः, निर्धनानाम्, शिल्पिभिः, तेषाम्।

4. (क) सन्धि-विच्छेद कीजिए—

   तदुत्तरम्, सकलाऽपि, सञ्चितार्थः, नासीत्, तस्याग्रे।

   (ख) सन्धि कीजिए—

   भोजः+नाम, गुण+अनुरागी, जन्मना+एव, कः+अपि।

चतुर्दशः पाठः

बालको ध्रुवः

पुरा उत्तानपादो नाम नृपः आसीत् । तस्य द्वे भार्ये आस्ताम्—सुनीतिः सुरुचिः च । सुनीतिः ज्यायसी पत्नी आसीत्, सुरुचिः तु कनीयसी । तयोः सुरुचिः नृपस्य प्रियतरा । सुनीतेः सूनुः ध्रुवः, सुरुचेस्तु उत्तमः ।

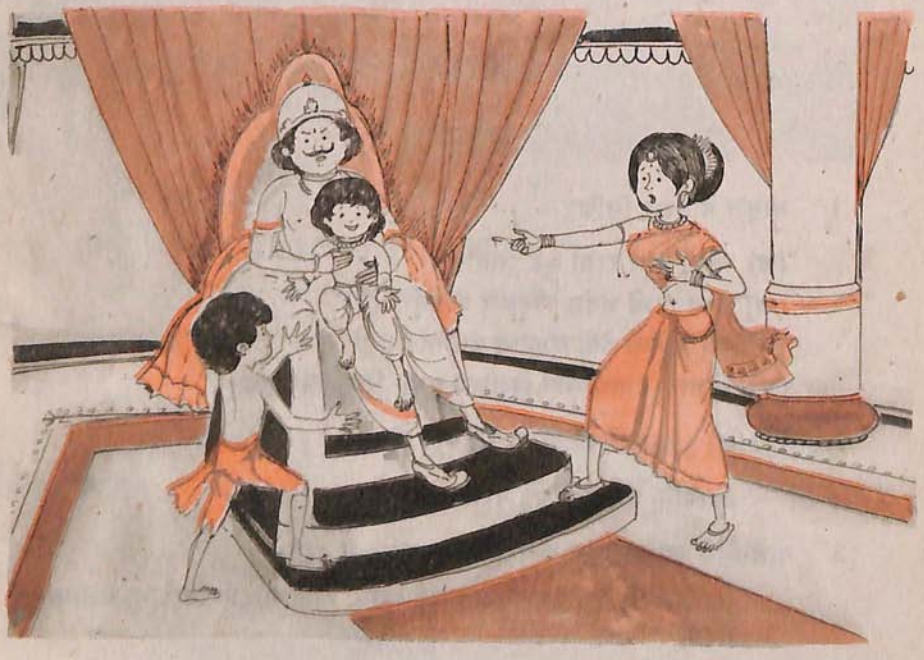

एकदा उत्तानपादः उत्तमम् अङ्के निधाय लालयन् आसीत् । तस्य समीपे सुरुचि. अपि स्थिता आसीत् । यदृच्छया तत्रागतः ध्रुवोऽपि पितुः अङ्कम् आरोढुम् ऐच्छत् । परन्तु सुरुचिः तं न्यवारयत् । सा सगर्वम् अवदत्—"कुमार, त्वं मम पुत्रः नासि । मम पुत्रः एव नृपतेः अङ्कम् आरोढुम् अर्हति । यदि त्वम्

अपि नृपतेः अङ्कम् अभिलषसि तर्हि भाविनि जन्मनि मम पुत्रः भवितुं यतस्व" इति ।

तदाकर्ण्य ध्रुवः नितरां दुःखितः अभवत् । असौ रुदन् मातुः सुनीतेः समीपम् अगच्छत्, सर्वं च तद् वृत्तान्तं मातरम् अकथयत् । पुत्रस्य वचनं श्रुत्वा सा दीर्घं निःश्वस्यावदत्—"वत्स, अप्रियमपि सत्यं वदति तव विमाता । भक्त-वत्सलं भगवन्तं सेवस्व, ततः त्वम् अभीष्टं लप्स्यसे" इति ।

'अम्ब, भगवन्तं सेविष्ये, अभीष्टं च तस्मात् लप्स्ये' इत्युक्त्वा ध्रुवः मातुः चरणयोः अपतत् । सा तमाशिषा समतोषयत् । ततः दृढं निश्चित्य पञ्चवर्षीयोऽपि असौ बालकः तपसे वनम् अगच्छत् ।

वनं गच्छन्तम् अमुं दृष्ट्वा देवर्षिः नारदः अपृच्छत्—"वत्स, त्वं कुत्र गच्छसि ?"

बालकः—"भगवन्, तपसे वनं गच्छामि । तपसा भगवन्तं सेवयित्वा पितुरङ्कं लप्स्ये ।"

नारदः—"वत्स, कठिनं तपः चरितुं नायं कालस्तव । त्वं गृहं गच्छ । विहारैः मनः विनोदय । उचिते काले तपसा भगवन्तं तोषयितुं यतेथाः ।"

बालकः—"भगवन्, विमातुः वचनेन कलुषिते मनसि भवतः उपदेशः न पदं करोति । मम निश्चयः दृढः । अतः मामनुगृह्य तपोमार्गमुपदिशतु भवान् ।"

नारदः—मनसा तमभिनन्दन् अवदत्—"बाल, गच्छ मधुवनं, यत्र नित्यं सन्निहितः हरिः । तत्रैव भगवन्तमाराधय । अचिरात् सः ते अभीष्टं प्रदास्यति ।" इत्युक्त्वा नारदः ततोऽगच्छत् ।

ध्रुवोऽपि नारदस्योपदेशमनुसृत्य मधुवनं प्राप्य तपः कर्तुम् आरब्धवान् । षट् मासाः व्यतीताः । बालस्य कठिनात् तपसो भीताः देवाः हरिमुपागच्छन् । अमी तं तपसो निवर्तयितुं हरिं प्रार्थयत । भगवान् विष्णुः बालस्य पुरः आविरभवत्, तं पाणिना अस्पृशत् च । ध्रुवस्तदा भगवतः पादयोः निपत्य स्तुतिमकरोत् । सन्तुष्टो भगवान् तस्य मनोगतं भावं विज्ञाय दुर्लभं ध्रुवपदं तस्मै प्रायच्छत् ।

एवं भगवतो वरं लब्ध्वा नगरं प्रतिनिवृत्तं ध्रुवं प्राप्य उत्तानपादः नितरां मोदते स्म । विमाता सुरुचिः अपि निर्मलेन मनसा तम् अभ्यनन्दत् । भगवतः प्रीतिपात्रं कस्य प्रीतिपात्रं न भवति !

शब्दार्थ

ज्यायसी	दोनों में बड़ी।
कनीयसी	दोनों में छोटी।
सूनुः	बेटा, पुत्र।
यदृच्छया	संयोगवश, स्वेच्छा से।
अङ्कम् आरोढुम्	गोद में बैठने को।
न्यवारयत्	मना किया।
दीर्घं निःश्वस्य	लंबी साँस छोड़कर।
समतोषयत्	सन्तुष्ट किया।
अनुगृह्य	कृपाकर।
अनुसृत्य	अनुसरण करके।
उपागच्छन्	पास आए।
निवर्तयितुम्	लौटने के लिए।
आविरभवत्	प्रकट हुआ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—
   (क) उत्तानपादस्य कति भार्याः आसन् ?
   (ख) नृपस्य प्रियतरा पत्नी का आसीत् ?
   (ग) ध्रुवः कस्याः पुत्रः ?
   (घ) सुरुचिः ध्रुवं कस्मात् न्यवारयत् ?
   (ङ) सुरुचिः ध्रुवं किम् अवदत् ?
   (च) ध्रुवः तपसा किं लब्धुमिच्छत् ?
   (छ) नारदं ध्रुवः किं प्रत्यवदत् ?

2. सही या गलत लिखकर उत्तर दीजिए -
   (क) ध्रुवस्य मातुः नाम सुरुचिः आसीत्। ( )
   (ख) उत्तानपादः ध्रुवम् अङ्के निधाय लालयन् आसीत्। ( )

(ग) नारदः ध्रुवं तपसः न्यवारयत् । ( )
(घ) ध्रुवः विष्णोः अनुग्रहेण ध्रुवपदं प्राप्तवान् । ( )

3. (i) निम्नलिखित वाक्यों में जो पद शुद्ध हो उसे सही चिह्न (√) से चिह्नित कीजिए—

(क) माताम् / मातरम् वन्दे ।
(ख) त्वं भगवन्तं विष्णुं सेवस्व / सेव ।
(ग) स एव पितुः अङ्कं लभति / लभते ।
(घ) त्वं भगवन्तं तोषयितुं यत / यतस्व ।

(ii) कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार परिवर्तित कीजिए—

(क) ध्रुव ! त्वं भाविनि जन्मनि मम पुत्रो भवितुं यतस्व । (भविष्यत् काल)
(ख) अम्ब, अहं भगवन्तं सेविष्ये, अभीष्टं च तस्मात् लप्स्ये ।(वर्तमान काल)
(ग) ध्रुवं प्राप्य उत्तानपादः नितरां मोदते स्म । (भविष्यत् काल)

4. निर्दिष्ट क्रिया का प्रयोग करते हुए संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अच्छे बालक माता पिता की सेवा करते हैं । (सेव्)
(ख) विद्या नम्रता से शोभा पाती है । (शुभ्)
(ग) योग्य छात्र को पाकर अध्यापक प्रसन्न होते हैं । (मुद्)
(घ) अब हम अच्छे अङ्क प्राप्त करेंगे । (लभ्)

5. 'असौ' और 'अमी' के उचित प्रयोग से खाली स्थानों को भरिए—

(क) — छात्राः संस्कृतस्य सन्ति ।
(ख) ——मम भ्राता वर्तते ।
(ग) — —बालकाः सर्वदा क्रीडन्ति ।
(घ) ——अध्यापकाः मां स्नेहेन पाठयन्ति ।

पञ्चदशः पाठः

कृषकः

ग्रामोऽयं शिवपुरनामा । अत्र वसन्ति बहवः कृषकाः । तत्र केचन धनिनः, कतिपये निर्धनाः इतरे च मध्यमाः । अत्रैव वसति मनोहरनामा कृषकः । पत्नी च तस्य पतिपरायणा ललिता । मनोहरस्य एकः पुत्रः एका च कन्या वर्तेते । अयमेव अस्य परिवारः ।

मासोऽयम् आषाढः । मेघाच्छन्नम् आकाशम् । तद्दृष्ट्वा हृष्टो मनोहरः पत्नीम् अवदत्—"ललिते, अद्य आकाशे मेघाः समागताः ।"

ललिता—"स्वामिन् । मेघास्तु प्रतिदिनम् आकाशे आयान्ति यान्ति च । न च वर्षति कदाचिद् देवः । अस्माकं सर्वाणि क्षेत्राणि कृष्टानि सन्ति । यदि भवति वृष्टिः तदा क्षेत्रेषु धान्यानि रोपितानि स्युः ।"

मनोहरः—"अयि, मा कुरु चिन्ताम् । अद्य वृष्टिः अवश्यमेव भविष्यति ।"

(तावत् समारब्धा वृष्टिः ।)

ललिता—"स्वामिन् । सत्यं ते वचः । ननु समारब्धा वृष्टिः । पश्य, आकाशात् वारि पतति ।"

मनोहरः—(सहर्षम्) "अहो ! कीदृक् शोभनं भवति वर्षणम् । भृशं वारीणि पतन्ति नभसः । अद्य सर्वेषाम् अस्माकं क्षेत्राणि वारिणा पूर्णानि भविष्यन्ति । श्वः एव सर्वे कृषकाः स्वेषु-स्वेषु क्षेत्रेषु धान्यबीजानि वप्स्यन्ति ।"

ललिता—"इदानीं परिसमाप्ता वृष्टिः । पर्याप्तं वृष्टो देवः । सर्वाणि क्षेत्राणि जलपूर्णानि दृश्यन्ते । इदानीं किं तावत् करणीयम् ।"

मनोहरः—"अहं हलं वृषभौ च क्षेत्रं नयामि । त्वं पुनः पुत्रेण साकं बीजक्षेत्रं गत्वा धान्यक्षुपान् उत्पाट्य, वारिणा प्रक्षाल्य, बद्ध्वा च तान् रोपण-क्षेत्रम् आनय ।"

मनोहरः गत्वा बलीवर्दौ युगे योजयित्वा क्षेत्रं कर्षति । पुनः क्षेत्रं कृष्ट्वा काष्ठपीठेन यावत् समीकरोति तावत् तस्य पत्नी, पुत्रः कन्या च समायान्ति मस्तकोपरि बद्धान् क्षुपान् आदाय । सहैव तैः आनीतं भोजनमपि मनोहराय। मनोहरः हस्तौ मुखं च वारिणा प्रक्षाल्य रोटिकां खादति । ततः ते चत्वारः धान्यक्षुपान् क्षेत्रे आरोपयन्ति । मनोहरस्य क्षेत्रं परितः सन्ति बहूनि क्षेत्राणि । सर्वेषु क्षेत्रेषु कृषकाः कर्मकरैः कर्मकरीभिश्च धान्यरोपणं कारयन्ति । स्त्रियश्च मध्ये-मध्ये मधुरं गानं कुर्वाणा रोपयन्ति क्षुपान् । आसायंकाले पूर्णतां गते रोपणकर्मणि गृहमागतः मनोहरः सपरिवारः । ततः पत्न्या सह तस्य एवम् भवति संलापः ।

मनोहरः—ललिते । अस्माभिः क्षेत्रे अद्य धान्यरोपणं कृतम् । मन्ये क्षेत्रेषु पञ्च-दिनानि यावत् पर्याप्तं वारि स्थास्यति एव । तावत् ते क्षुपाः बद्धमूला भविष्यन्ति ।

ललिता—अद्यत्वे अधिकम् अन्नम् उत्पन्नं यथा स्यात् तथा सर्वैः स्वक्षेत्रेषु उर्वरकं प्रयुज्यते। तेन तेषां क्षेत्रेषु अधिकम् अन्नम् उत्पद्यते। परं निर्धनाः वयं कुतः उर्वरकं प्राप्स्यामः ?

मनोहरः—अलं चिन्तया। प्रशासनस्यापि ध्यानम् अस्मिन् विषये आकृष्टं वर्तते। किम् न जानासि यत् अस्मिन् एव ग्रामे पञ्च नलकूपाः प्रशासनेन कारिताः। अन्यानि अपि कृषिसाधनानि अचिरेणैव आनेयानि सन्ति। आधुनिकैः साधनैः कृषिकर्मणि महत् सौविध्यं जायते।

ललिता—स्यादेतत् सर्वम्। किन्तु कुतः वयं उर्वरकं प्राप्स्यामः ?

मनोहरः—उर्वरकमपि प्रशासनमेव ददाति, यस्य च मूल्यं पश्चाद् देयं भवति। ततः एवम् उर्वरकं नीत्वा अहमपि स्वकीये क्षेत्रे प्रयोक्ष्ये। तेन उत्पादने वृद्धिः अवश्यं भविष्यति। मन्ये, प्रशासनम् स्वीकरोति—अन्नस्य समस्यां समाधातुं कृषौ सर्वविधा प्रगतिः एवैकः उपायः इति।

शब्दार्थ

मेघाच्छन्नम्	मेघों से घिरा हु॰ ।
हृष्टः	प्रसन्न।
समारब्धा	आरम्भ हुई।
भृशम्	अधिक।
नभसः	आकाश से।
वप्स्यन्ति	बोयेंगे।
क्षुपान्	बीज के छोटे पौधे को।
उत्पाट्य	उखाड़ कर।
कृष्ट्वा	जोत कर (कृष्+क्त्वा)
बलीवर्दौ	दोनों बैल।
युगे	जुए में।
काष्ठपीठस्य	खेत को बराबर करने वाला तख्ता, हेंगा।

कर्मकरीभिः	मजदूरनियों से।
बद्धमूलाः	जिनकी जड़ें जम गई हों।
उर्वरकम्	खाद।
प्रयोक्ष्ये	प्रयोग करूंगा।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

(क) मनोहरः कः आसीत् ?
(ख) मनोहरस्य पत्नी क्षेत्रे किं किम् आनीतवती ?
(ग) कृषेः उन्नत्यै प्रशासनं किं किं करोति ?
(घ) उर्वरकं कः ददाति ?
(ङ) मनोहरस्य पत्न्याः किं नामासीत् ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) मनोहरस्य एका कन्या एकः.....च वर्तते।
(ख) पत्न्या..... मनोहरस्य एवमभवत् संलापः।
(ग) .....उर्वरकं कुतः प्राप्स्यामः।
(घ) उर्वरकम् अपि .....ददाति।

3. शुद्ध पद चुनकर वाक्य की पूर्ति कीजिए—

(क) आकाशात्.....पतन्ति। (वारयः, वारीणि)
(ख) कृषकः.....क्षेत्रं सिञ्चति। (वारिणा, वारिना)
(ग) बकाः सरोवरस्य.....क्रीडन्ति। (वारौ, वारिणि)
(घ) इदं गङ्गायाः पवित्रं.....वर्तते। (वारि, वारिः)

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

मासोऽयम्, मेघाच्छन्नम्, स्यादेतत्, एवैकः।

5. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर पाँच वाक्य लिखिए।

कृषकः, वृष्टिः, वारि।

षोडशः पाठः

मधुबिन्दवः

सदूषणाऽपि निर्दोषा सखराऽपि सुकोमला ।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा ।। 1 ।।

—त्रिविक्रमभट्टः

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ।। 2 ।।

—भवभूतिः

तावत् कोकिल ! विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन् ।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति ।। 3 ।।

—पण्डितराजो जगन्नाथः

आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानाम् आत्मन्यप्रत्ययं चेतः ।। 4 ।।

—कालिदासः

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान् असंवृताङ्गान् निशिता इवेषवः ।। 5 ।।

—भारविः

शब्दार्थ

सदूषणा	दोषों से युक्त, दूषण नामक राक्षस से सम्बद्ध ।
निर्दोषा	दोष रहित ।
सखरा	कठोर, खरनामक राक्षस से सम्बद्ध ।
मृदूनि	कोमल, मधुर, सरस ।

लोकोत्तराणाम्	महापुरुषों के, असामान्य लोगों के।
चेतांसि	मन, विचार।
विरसान् दिवसान्	दुःखद दिन।
यापय	बिताओ।
वनान्तरे	किसी और वन में।
मिलदलिमालः	भौंरों की पंक्तियों से
रसालः	आम का पेड़।
समुल्लसति	खिलता है।
आपरितोषात्	सन्तुष्ट होने तक।
साधु	ठीक।
प्रयोगविज्ञानम्	अभिनय कला, प्रयोगात्मक ज्ञान।
अप्रत्ययम्	अविश्वस्त, सन्दिग्ध।
मूढधियः	मूर्ख।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) रामायणी कथा केन कृता ?

   (ख) लोकोत्तराणां चेतांसि कीदृशानि भवन्ति ?

   (ग) रसालः कस्मिन् ऋतौ समुल्लसति ?

   (घ) शिक्षितानां चेतः आत्मनि कीदृशं भवति ?

   (ङ) मायाविषु ये मायिनः न भवन्ति ते कं व्रजन्ति ?

2. श्लोक संख्या 3 और 5 के भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

सप्तदशः पाठः

रघोः उदारता

आसीत् पुरा कस्मिंश्चित् वने निसर्गरमणीयं शान्तं पवित्रं किमपि आश्रमपदम् । तत्र तपःपरायणाः ऋषयः वसन्ति स्म । ऋषीणां तपःप्रभावात् परस्परं वैरभावम् अपहाय पशवः पक्षिणश्च निर्भयं तत्र विचरन्ति स्म । क्वचित् वृक्षस्य छायायां शयालुः मृगः अदृश्यत, अपरत्र अवलोक्यते स्म निद्रालुः सिंह-शिशुरपि, न चाभूत् कदापि तयोः परस्परं कलहः । तथाविधे आश्रमपदे कथं वा संभवेत् हिंसायाः प्रसरः ।

आसीत् तत्र पारावारः कारुण्यस्य, सिन्धुः औदार्यस्य,सेतुःभवसागरस्य, वरतन्तुनामा कुलपतिः । तत्र अनेके मेधाविनः पटवश्च वटवः अपठन् । तेषु कश्चन आकृत्या मृदुलः प्रकृत्या सरलः कौत्सनामा वटुः आसीत् । अयंबालः स्वल्पेनैव कालेन वेदानां वेत्ता, पुराणानां पठिता,दर्शनशास्त्राणां विज्ञाता चाभवत् ।

विद्याध्ययनं परिसमाप्य गुरुदक्षिणां दातुं उत्सुकः असौ कौत्सः एकदा गुरुम् उपगम्य निजेच्छां प्रकटितवान् । तस्य वचः श्रुत्वा गुरुणा कथितम्—"तव विशुद्धया श्रद्धया, उत्कृष्टया भावनया, परमया सेवया च नितान्तमस्मि प्रीतः । तस्मात् नाहं कामये अन्यां काञ्चित् दक्षिणाम् ।" आचार्यवाक्यं श्रुत्वा कौत्सः पुनः अवदत्—"यदि न ग्रहीष्यन्ति भवन्तः मम सकाशात् किमपि, तदा ममाध्ययनं व्यर्थम् एवेति मे विश्वासः" । एवं रीत्या यदा कौत्सः वारं वारम् आग्रहं कृतवान् तदा कुपितेन गुरुणा कथितम्—"त्वम् मम सकाशात् चतुर्दश विद्याः अधीतवान् असि, अतः चतुर्दशकोटीः स्वर्णमुद्राः मह्यं देहि" इति ।

गुरोः वचनं श्रुत्वा कौत्सस्य मनसि चिन्ता जाता, इयत्यः मुद्राः कुतः आनेयाः ? इति । न च दृश्यते कश्चन अन्यो जनः एतावत् धनं दातुं समर्थः । तस्मात् दातॄणां मध्ये श्रेष्ठस्य रघोः सकाशम् एव चलितव्यम् इति विचार्य कौत्सः रघोः समीपम् उपागच्छत् ।

रघुश्च तदानीं विश्वजिति यज्ञे सर्वस्वं दत्तवान् आसीत् । तस्मिन् समये तत्समीपे किमपि दातुं नासीत् । रघोः स्थितिं विज्ञाय कौत्सः ततः परावर्तितुम्

ऐच्छत् । तं तथा कुर्वन्तमवलोक्य रघुणा कथितम्—"कथम् इतः परावर्तते भवान् ? कृपया उच्यतां स्वाभिप्रायः निःसंकोचम् ।" ततः कौत्सः अवदत्—"गुरुदक्षिणां दातुम् अहं चतुर्दशकोटीः स्वर्णमुद्राः वाञ्छामि । किन्तु भवतां समीपे इदानीं किमपि नास्ति इति विज्ञाय गन्तुमिच्छामि । तच्छ्रुत्वा रघुरवदत्—"कतिचित् दिनानि प्रतीक्षताम् अत्रभवान् यावदहं भवदीयाम् इच्छां पूरयितुं यतिष्ये ।" एवं कौत्सम् आश्वास्य कुबेरस्य सकाशात् धनं प्राप्तुं राजा प्रातः प्रयाणम् अकल्पयत् । रघोः अभिप्रायं ज्ञात्वा कुबेरः तस्य कोषागारम् अपरिमित-स्वर्णमुद्राभिः अपूरयत् । पूरितं कोषागारं प्रेक्ष्य प्रसन्नः रघुः कौत्सम् अवदत्—"गृह्यतां भवता अयं निखिलः धनराशिः । सन्तुष्यतु अनेन भवताम् आचार्यवर्यः ।" राज्ञः तद् वचः श्रुत्वा कौत्सः अवदत्—"किम् मे प्रयोजनं निखिलेन धनेन ? यावत् आनेतुम् आदिशत् मे आचार्यः तावत् कामये, न ततोऽधिकम् ।" विचित्रा खलु स्थितिः सञ्जाता । रघुः निखिलं धनराशिं दातुं कामयते, कौत्सः तु

अधिकं ग्रहीतुं न इच्छति । उभयोः त्यागभावनाम् उदारताम् च विज्ञाय प्रजाः परां प्रीतिमविन्दन् ।

शब्दार्थ

निसर्गरमणीयम्	स्वतः सुन्दर, स्वाभाविक सुन्दरता वाला ।
आश्रमपदम्	आश्रम ।
शयालुः	सोया हुआ ।
पारावारः	समुद्र ।
मेधाविनः	बुद्धिमान् ।
पटवः	चतुर ।
वटवः	ब्रह्मचारी, विद्यार्थी ।
आकृत्या मृदुलः	सुकुमार, कोमल आकार वाला ।

वेत्ता	जानने वाला।
परिसमाप्य	पूरा करके।
उपगम्य	समीप जाकर।
उत्कृष्टया भावनया	अच्छी भावना से, उदात्त विचार से।
प्रीतः	प्रसन्न।
चतुर्दशविद्याः	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दः शास्त्र, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण।
चतुर्दशकोटीः	चौदह करोड़ (को)।
विश्वजिति यज्ञे	विश्वजित् नामक यज्ञ में (विश्वजित् एक प्रकार के यज्ञ का नाम है जिसमें सर्वस्वदान किया जाता है)।
प्रयाणमकल्पयत्	जाने की तैयारी की।
प्रेक्ष्य	देखकर।
अविन्दन्	प्राप्त किया।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—

   (क) वरतन्तुः कुत्र निवसति स्म ?

   (ख) कौत्सः कः आसीत् ?

   (ग) कौत्सः रघुसमीपं किमर्थम् अगच्छत् ?

   (घ) रघुः कस्मिन् यज्ञे सर्वस्वं दत्तवान् आसीत् ?

   (ङ) रघोः प्रजाः कथं परां प्रीतिमविन्दन् ?

2. कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

   (क) तत्र मेधाविनः·····वटवः अपठन्। (अनेके / अनेकाः)

   (ख) ·····वचनं श्रुत्वा कौत्सस्य मनसि चिन्ता जाता। (गुरुस्य / गुरोः)

(ग) किम् मे प्रयोजनम्·····धनेन । (इयता / इयतेन)

(घ) कौत्सः अधिकं धनं ·····न इच्छति । (गृहीतुम् / ग्रहीतुम्)

(ङ) प्रजाः ·····प्रीतिम् अविन्दन् । (पराम् / परम्)

3. अनुवाद कीजिए—

(क) यह मेरा विद्यालय है ।

(ख) विद्यालय में एक सुन्दर उद्यान है ।

(ग) महर्षि वाल्मीकि ने रामायण लिखी ।

(घ) गुरु के समीप अनेक पटु वटु पढ़ते थे ।

(ङ) कौत्स धन के लिए रघु के पास गया ।

अष्टादशः पाठः

शक्तिमहिमा

अस्मिन् संसारे शक्तेः महिमा सर्वत्र दृश्यते। इयं शक्तिः देवेषु, दानवेषु, मानवेषु, पशुषु, पक्षिषु, ग्रहनक्षत्रेषु च सर्वत्र वर्तते।

शक्तिं विना न सिद्ध्यति किमपि कार्यम्। पश्यतु भवान् सूर्यम् आकाशे, अयं रविः शक्त्या एव भासते तपति च। चन्द्रः अपि शक्त्या एव तमो निवारयति, लोकानां मनांसि आनन्दयति च। शक्ति-प्रभावादेव अग्निः दहति, वायुः वाति, जलं च वहति। किं बहुना, इयं पृथिवी अपि शक्त्या एव सर्वं धारयति।

यत्र शक्तिः तत्रैव जीवनम्। यत्र नास्ति शक्तिः न तत्र जीवनम्। अग्नेः शक्तिः दाहकता अस्ति। यावत् तिष्ठति तत्र दाहकता तावत् एव अग्निः अग्निरिति मन्यत। अन्यथा असौ भस्म इति कथ्यते। पिपीलिकाः अपि तदुपरि सुखेन चलितुं शक्नुवन्ति।

इदं जगत् निरन्तरं गतिशीलम् अस्ति । सूर्यः चलति, चन्द्रः चलति, ग्रहाः चलन्ति, नक्षत्राणि चलन्ति । देवाः, मनुष्याः, पशवः, पक्षिणः, जलचराश्च निरन्तरं चलन्ति । सर्वेषु गतिः वर्तते । इयं गतिः, इयं क्रिया, इयं स्थितिः—

इत्येतत् सर्वं न भवितुमर्हति शक्तिं विना । अतः स्पष्टं वक्तुं शक्यते यत् अयं संसारः शक्तेः एव विलासः ।

इयं शक्तिः बहुविधा वर्तते — शरीरशक्तिः, बुद्धिशक्तिः, धनशक्तिः, जनशक्तिः, सैन्यशक्तिः, राष्ट्रशक्तिश्च । आसु बुद्धिशक्तिरेव श्रेष्ठा । यस्य शारीरिकं बलं स्यात् परं बुद्धिः न स्यात् तस्य तद् बलं व्यर्थम् एव । बलवान् अपि गजः बुद्धिमता मनुष्येण तद् वशम् आनीयते । भयानकः अपि सिंहः बुद्धिबलात् पञ्जरबद्धः क्रियते । बुद्धिं विना सिद्धिः न मिलति । बुद्ध्या एव विद्या प्राप्यते, बुद्ध्या एव यन्त्राणि निर्मीयन्ते ।

यद्यपि—'सङ्घे शक्तिः कलौ युगे'—इति कथितं, तथापि तत्रापि बुद्धेः महती आवश्यकता । अतएव कस्यापि संघस्य सञ्चालनं बुद्धिमन्तं नेतारम् अपेक्षते । परं बुद्धिस्तु सा एव हितकारिणी या सन्मार्गम् अनुसरति । इयमेव जीवनस्य उपलब्धिः ।

शब्दार्थ

वाति	बहता है।
पिपीलिका	चींटी।
पञ्जरबद्धः	पिंजड़े में बन्द।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—
   (क) सूर्यः शक्त्या किं करोति ?
   (ख) मनुष्यः गजं कया शक्त्या वशीकरोति ?
   (ग) संघस्य सञ्चालनं कीदृशं नेतारम् अपेक्षते ?
   (घ) मानवजीवनस्य का उपलब्धिः ?
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   (क) शक्तिं विना न सिद्ध्यति किमपि.....।
   (ख) चन्द्रः शक्त्या एव ..... निवारयति।
   (ग) अयं संसारः..... एव विलासः।
3. निम्नलिखित पदों के मूल शब्द लिखिए—
   पक्षिषु, शक्त्या, बुद्धेः, कलौ, नेतारम्।
4. अनुवाद कीजिए—
   (क) बुद्धि के बिना सिद्धि नहीं मिलती है।
   (ख) बुद्धि का सदुपयोग ही कल्याणकारी होता है।
   (ग) संघ में शक्ति होती है।
   (घ) जहाँ शक्ति है, वहीं जीवन है।
5. निम्नलिखित वाक्यों में जो शुद्ध पद हैं उन्हें √ चिह्न से चिह्नित कीजिए—
   (क) शक्त्या/शक्तिना सर्वं सिद्ध्यति।
   (ख) जगति सर्वे शक्तीः/शक्तीन् नमन्ति।
   (ग) इमाः शक्तयः/शक्त्यः बहुविधा वर्तन्ते।

एकोनविंशः पाठः

शिवाः आपः सन्तु

जीवने अन्नापेक्षया जलस्य अधिकं महत्त्वमस्ति । अत एव जलस्यापरं नाम 'जीवनम्' इति सङ्गच्छते ।

जलं यथा व्यक्तेः जीवने अनिवार्यं भवति तथैव समाजस्य राष्ट्रस्य च जीवनेऽपि । अस्माकं देशः कृषिप्रधानः । देशस्यौद्योगिकः, आर्थिकः, भौतिकः च विकासः कृषिमवलम्ब्यैव तिष्ठति । कृषेः विकासाय जलमावश्यकम् । वृष्टि-जलेन, नदीजलेन, प्रपातजलेन, कूपजलेन, तडागजलेन वा कृषेः सेचनं भवति ।

ये च देशाः नदीजलेन सस्यसम्पन्नाः भवन्ति ते नदीमातृकाः । नद्यः स्नानाय, पानाय, सस्यसेचनाय च जलं वितरन्ति । जनाः नदीषु तत्र तत्र सेतुं बद्ध्वा जलसञ्चयं कृत्वा कुल्याद्वारा जलं सुदूरं नयन्ति । तेन च क्षेत्राणि सिञ्चन्ति । ये च देशाः कृषिकार्याय वृष्टिजलमपेक्षन्ते ते देवमातृकाः भवन्ति ।

नद्योऽपि वृष्टिमवलम्बन्ते । **काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी** इति प्रार्थना वृष्टेः महत्त्वं सूचयति । न हि शक्नुवन्ति जलमन्तरा तृणादीन्यपि जीवितुम् । तृणादीनि च धेन्वादीनां पशूनामाहाराः भवन्ति । पशवो मानवजीवनस्य मुख्यान्यङ्गानि सन्ति ।

प्रायेण नदीतीरेष्वेव महानगराणि विकासमुपगच्छन्ति । नानाप्रकाराः उद्योगाः अपि तत्रैव स्थाप्यन्ते विकसन्ति च । जलमार्गेण सञ्चारस्य सौकर्यमपि मानवजीवनं सुखमयं करोति । अत एव नदीतटेषु जनानामावासस्थानानि अधिकानि दृश्यन्ते ।

सर्वप्रकाराणामुद्योगानां विकासः विद्युतः शक्तिम् अपेक्षते । तां विना कोऽपि उद्योगः अधिकोत्पादनक्षमो लाभप्रदो वा न भवति । प्रकाशाय तस्याः उपयोगः सर्वविदितः । सा च शक्तिः स्वाभाविकैः कृतकैः वा जलप्रपातैः निरायासम् उत्पाद्यते । अतः नदीजलं विद्युदुत्पादनेऽपि सहायकं भवति ।

एवं च नद्यः राष्ट्रजीवनं सर्वसम्पन्नं कुर्वन्ति । परन्तु कदाचित् इमाः भीषणाकारं धारयन्त्यः जलप्रवाहैः देशान् प्लावयन्त्यः विनाशहेतवोऽपि भवन्ति । अत एव भारतीयाः निग्रहे अनुग्रहे च समर्थतया इमाः देवताः मन्यन्ते ।

पुरातनाः महर्षयस्तु जलस्य महत्त्वं सम्यक् ज्ञातवन्तः आसन् । अत एव ते **'शिवाः आपः सन्तु'** इति प्रार्थयन्त । जलानि सर्वदा मङ्गलरूपाणि भवन्तु, मा कदापि नाशकानि भवन्तु इति मन्त्रस्याशयः ।

इमाः आपः शिवाः सन्तु,
शुभाः सन्तु च निर्मलाः ।
पावनाः शीतलाः सन्तु,
पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥

शब्दार्थ

सङ्गच्छते	संगत होता है, सार्थक हो ा है।
प्रपातजलेन	झरने के जल से।
पर्जन्यः	बादल।
अन्तरा	विना।
कृतकैः	बनावटी, कृत्रिम।
विद्युदुत्पादने	बिजली के उत्पादन में।
निग्रहे	दण्ड देने में।
अनुगहे	कृपा करने में, पुरस्कार देने में।
समर्थतया	समर्थ होने से।
पावनाः, पूताः	पवित्र।
रश्मिभिः	किरणों से।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

   (क) ये देशाः नदीजलेन सस्यसम्पन्नाः भवन्ति ते·····उच्यन्ते।

   (ख) ये देशाः कृषिकार्याय वृष्टिजलमपेक्षन्ते ते·····भवन्ति।

   (ग) जलस्य अपरं नाम·····इति सङ्गच्छते।

   (घ) न हि ·····जलमन्तरा तृणादीन्यपि जीवितुम्।

   —(जीवनम्, नदीमातृकाः, शक्नुवन्ति, देवमातृकाः)

2. 'आपः शिवाः सन्तु' इत्यादि प्रार्थना का अर्थ लिखिए।

3 नीचे लिखे शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिए—

   सस्यशाली, सुखमयः, भौतिकः, नरः, शुकः, सिंहः, महान्, बालकः, राजा, देवः, अजः, गोपः।

4. रेखाङ्कित पदों में जो शुद्ध हों उन्हें √ इस चिह्न से चिह्नित कीजिए—

   (क) वृष्टिजलेन/वृष्टिजलात् कृषेः सेचनं भवति।

   (ख) परिश्रमं/परिश्रमस्य विना सफलता न प्राप्यते।

   (ग) जीवने अन्नात्/अन्नेन जलस्याधिकं महत्त्वम् अस्ति।

विंशः पाठः

अशोकवाटिकायां सीता

सीता रावणं प्रति—

साधु धर्ममवेक्षस्व साधु साधुव्रतं चर ।
यथा तव तथान्येषां रक्ष्या दारा निशाचर ॥ 1 ॥

स त्वमिक्ष्वाकुनाथं वै क्षिपन्निह न लज्जसे ।
चक्षुषो विषयं तस्य न यावदुपगच्छसि ॥ 2 ॥

तस्य धर्मात्मनः पत्नीं स्नुषां दशरथस्य च ।
कथं व्याहरतो मां ते न जिह्वा पाप शीर्यते ॥ 3 ॥

शक्या लोभयितुं नाहम् ऐश्वर्येण धनेन वा ।
अनन्या राघवेणाहं भास्करेण यथा प्रभा ॥ 4 ॥

अकार्यं न मया कार्यमेकपत्न्या विगर्हितम् ।
कुलं सम्प्राप्तया पुण्यं कुले महति जातया ॥ 5 ॥

निवर्तय मनो मत्तः स्वजने क्रियतां मनः ।
न मां प्रार्थयितुं युक्तः त्वं सिद्धिमिव पापकृत् ॥ 6 ॥

राक्षसीः प्रति—

चरणेनापि सव्येन न स्पृशेयं निशाचरम् ।
रावणं किं पुनरहं कामयेयं विगर्हितम् ॥ 7 ॥

हनुमन्तं प्रति—

कल्याणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति माम् ।
एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि ॥ 8 ॥

(वाल्मीकि-रामायणात्)

शब्दार्थ

अवेक्षस्व	देखो, समझो, परिपालन करो ।
दारा	स्त्री, पत्नी ।
इक्ष्वाकुनाथम्	इक्ष्वाकु-कुल के स्वामी को ।
क्षिपन्	निन्दा करते हुए ।
चक्षुषो विषयम्	नेत्र के सामने ।
स्नुषा	पुत्र-वधु, पुत्र की पत्नी ।
कथं न शीर्यते	कटकर गिर क्यों नहीं जाती ।
विगर्हितम्	निन्दित को, पापी को ।
सव्येन चरणेन	बाएँ पाँव से ।

कल्याणी	हित करने वाली।
गाथा	सूक्ति।

अभ्यास

1. अपनी भाषा में उत्तर दीजिए—
   (क) रावणं प्रति सीता किं वदति स्म ?
   (ख) राक्षसीः प्रति सीता किमवदत् ?
   (ग) हनुमन्तं प्रति सीता किम् अभाषत ?

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए—
   एकपत्नी, पापकृत्, अनन्या, विगर्हितम्।

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए—
   नाहम्, राघवेणाहं, गाथेयम्, वर्षशतादपि।

4. मिलाकर लिखिए—
   चरणेन+अपि, पुनर्+अहम्, सिद्धिम्+इव।

5. 'अनन्या राघवेणाहं भास्करेण यथा प्रभा'—इसका तात्पर्य बताइए।

एकविंशः पाठः

आजादः चन्द्रशेखरः

'तव किं नाम अस्ति ?'

आजादः ।'

'कस्तव पिता ?

'स्वाभिमानः।

'क्व निवासस्थानम् ।'

'कारागारः ।'

एतादृशानि उत्तराणि न्यायाधीशस्य प्रश्नानां परतन्त्रताकाले येन दत्तानि स आसीत् चन्द्रशेखरः 'आजादः' ।

संस्कृतस्य एव छात्रः, नाम्ना चन्द्रशेखरः, तदानीं वाराणस्यामधीते स्म । एकादशवर्षदेशीयेन यदा अनेन 'जलियानवाला' काण्डस्य नृशंसता श्रुता तदेव तेन संकल्पितम्— 'येन केनापि प्रकारेण इदं क्रूरशासनम् उन्मूलनीयम्' इति ।

शीघ्रमेव सः कालः आयातः । भारते ब्रिटिश्युवराजः आगच्छत् । शासनेन तस्य स्वागताय यद् आयोजनं कृतं तस्य बहिष्काराय देशवासिभिः निश्चयः कृतः । वाराणस्यां क्वीन्सकालेज इति नाम्ना ख्यातस्य संस्कृतमहाविद्यालयस्य प्राङ्गणे आयोजिते बहिष्कारकार्यक्रमे आन्दोलनं कुर्वाणः आजादः अल्पवयस्कोऽपि निगृहीतः । कतिपयदिनानन्तरं च सः न्यायालयमानीतः। न्यायाधीशः तं पञ्चदशवर्षकल्पं बालकमपि तथाविधोत्तरदानेन उद्दण्डं ज्ञात्वा

क्रूरं दण्डं श्रावयन् उक्तवान्— 'पञ्चदशवारं वेत्रदण्डेनैनं ताडयित्वा कारागारान्निष्कासये' ति ।

वेत्रप्रहारकः तं निर्वस्त्रं विधाय तस्य पृष्ठदेशं तथा निर्दयं हन्ति स्म यथा तस्य पृष्ठचर्म उच्छिन्नम् अजायत ।

सः प्रतिवेत्रघातम्— 'महात्मा गान्धी विजयताम्', 'भारत-माता जयतु' 'ब्रिटिश्-शासनं नश्यतु' इति नादं तावत्पर्यन्तमकरोत् यावत् किल मूर्च्छितो नाभवत् ।

साइमन-समितेः बहिष्कारं कुर्वन् लाला लाजपतरायः वयोवृद्धः गौराङ्गै-स्तथा ताडितः यथा स कतिपयैरेव दिनैः पञ्चत्वं गतः । तस्य प्रतिशोधाय प्रवृत्ताः —आजादः, भगतसिंहः, शिवरामः, राजगुरुः जयगोपालश्च—इमे सर्वे स्काटं लाजपतरायस्य मृत्योः मुख्यहेतुभूतं हतवन्तः ।

आजादः १९३१ तमे वर्षे फरवरीमासस्य सप्तविंशे दिनाङ्के पूर्वाह्णे दशवादनसमये प्रयागस्य अल्फ्रेड्-वाटिकायां सुखदेवराजेन सह उपविशन् 'नाटबावरेण' अन्यैः पुलिस-सहचरैश्च सर्वतः सहसा आक्रान्तः । नाटबावरस्य भुशुण्डीगुटिका आजादस्य जङ्घायां प्रविष्टा । आजाद-प्रक्षिप्ता च गुटिका बावरस्य प्रकोष्ठं सच्छिद्रं विधाय बहिर्गता । धण्टैकं यावद् उभयतः गुटिकावृष्टिः सञ्जाता । एकतः एकाकी आजादः, अन्यतः च बहवः शत्रवः । यदा गुटिकाः समाप्तप्रायाः अभवन् तदा आजादः अन्तिमया गुटिकया आत्मानं हत्वा स्वकीयं 'आजाद' इति नाम सार्थकं कुर्वन् स्वप्राणान् हुतवान् स्वातन्त्र्ययज्ञकुण्डे वीरगतिं च प्राप्तवान् ।

जगरानी प्रसूर्धन्या सीतारामःपिता तथा ।
धन्यश्च भावराग्रामः पुण्यौ काशीप्रयागकौ ॥

शब्दार्थ

एकादशवर्षवेशीयः	लगभग ग्यारह वर्ष का ।
नृशंसता	क्रूरता ।
उन्मूलनीयम्	उखाड़ना चाहिए ।

बहिष्कारम्	विरोध को।
अल्पवयस्कः	कम उम्रवाला।
पञ्चदशवर्षकल्पम्	पन्द्रह वर्ष का।
वेत्रदण्डेन	बेंत की सजा से।
निर्वस्त्रम्	नंगा।
पृष्ठचर्म	पीठ का चमड़ा।
गौराङ्गैः	गोरों, अंग्रेजों के द्वारा।
सहसा	एकाएक।
प्रकोष्ठम्	कलाई।
भुशुण्डी	बन्दूक।
भुशुण्डिका	पिस्तौल।
गुटिका	गोली।
प्रसूः	माता।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) चन्द्रशेखरः स्वस्य नाम किमुक्तवान् ?
(ख) आजादः कुत्र पठति स्म ?
(ग) आजादः कस्मिन् वर्षे वीरगतिं प्राप्तवान् ?
(घ) प्रयागस्य कस्यां वाटिकायाम् आजादः वीरगतिं प्राप्तवान् ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) एकतः·····आजादः।
(ख) आजादस्य ·····गुटिका प्रविष्टा।
(ग) गौराङ्गैः ताडितो लालालाजपतरायः कतिपयैरेव दिवसैः·····गतः।
(घ) ·····यावत् उभयतः गुटिकावृष्टिः सञ्जाता।

3. (क) निम्नलिखित शब्दों को पुंलिङ्ग में बदलिए—

अन्तिमा, समाप्ता, धन्या, उन्मूलिका।

(ख) निम्नलिखित शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलिए—

महान्, सिंहः, विधायकः, हुतवान्।

द्वाविंशः पाठः

सुहृत्संलापः

सुरेन्द्रः अहो ! त्वं कस्मिन् विद्यालये प्रवेशं प्राप्तवान् ? अहं सप्तमीं कक्षामुत्तीर्य ग्रामात् देहलीमागतवान् । अत्र च प्राप्ताङ्कानां प्रतिशताधिक्यात् केन्द्रीय-विद्यालये सारल्येन प्रवेशमाप्तवान् । त्वं कुत्र कस्यां च कक्षायां पठसि ?

देवेन्द्रः मम गृहस्य समीपे वर्तते एकः विद्यालयः । तस्य परीक्षाफलं शोभनं, वातावरणं च रम्यम् । अतः अहं तत्रैव अष्टमकक्षायां पठामि । वद । त्वया कस्मिन् कस्मिन् विषये कति कति अङ्काः प्राप्ताः ?

सुरेन्द्रः मया संस्कृते प्रतिशतं पञ्चनवतिः, हिन्दीभाषायां सप्तसप्ततिः, गणिते नवतिः, आङ्ग्लभाषायां पञ्चषष्टिः अङ्काः लब्धाः। चित्रकलायां, विज्ञाने सामाजिकविज्ञाने च क्रमशः अशीतिः, अष्टसप्ततिः षट्षष्टिः च अङ्काः मया प्राप्ताः। त्वया कस्मिन् विषये कति अङ्काः लब्धाः इति श्रोतुमिच्छामि।

देवेन्द्रः तवाङ्काः यथा प्रशंसनीयाः तथा न मम। परीक्षाकाले अहं ज्वरग्रस्तः। तथापि संस्कृतस्य गणितस्य च अङ्कैः प्रथमश्रेणी मयापि लब्धा। कक्षायां द्वितीयं स्थानमपि प्राप्तम्।

सुरेन्द्रः साधूक्तम्। संस्कृतं गणितं च कामधेनुः। अनयोः सेवया परीक्षार्थिनः सर्वत्र प्रथमश्रेणीं प्रथमस्थानं च विन्दन्ति। मम भ्राता संस्कृतस्य गणितस्य च प्रसादात् भारतीयप्राशासनिकसेवापरीक्षायां प्रथमं स्थानमुपलब्धवान्। स चेदानीमुच्चतरस्थानमलङ्करोति मन्त्रालये।

देवेन्द्रः मित्र! वद, तव विद्यालये कस्यां कस्यां कक्षायां कियन्तः कियन्तः छात्राः वर्तन्ते। तत्र संस्कृतस्य कीदृशी स्थितिः।

सुरेन्द्रः शृणु, अष्टम्याः कक्षायाः पञ्च विभागाः सन्ति। तत्र प्रथमे भागे पञ्चाशत्, द्वितीये विभागे पञ्चपञ्चाशत्, तृतीये विभागे षट्पञ्चाशत्, चतुर्थे विभागे एकोनषष्टिः छात्राः सन्ति, सर्वे च संस्कृतं पठन्ति। अतः तत्र संस्कृतस्य स्थितिः न शोचनीया यथान्यत्र।

देवेन्द्रः मम विद्यालयेऽपि सप्तम्याः कक्षायाः विभागद्वये द्वानवतिः छात्राः वर्तन्ते, षष्ठ्याः कक्षायाः प्रथमे द्वितीये च विभागे मिलित्वा अष्टानवतिः विद्यार्थिनः सन्ति। तस्याः एव कक्षायाः तृतीये चतुर्थे च विभागे प्रविष्टानां छात्राणां सङ्ख्या त्रयोनवतिः वर्तते, ते सर्वे संस्कृतं सरुचिं पठन्ति।

देवेन्द्रः मम विद्यालये षष्ठ्यां कक्षायां साम्प्रतं प्रवेशः अवरुद्धः। यतः तत्र द्वयोरपि विभागयोः शतं छात्राः अभवन्। ह्यः तत्र नवनवतिः छात्राः आसन् अतः मम अनुजः प्रवेशमलभत।

सुरेन्द्रः सौभाग्यं तस्य । इदानीं विशेषतः देहल्यां प्रशस्ते विद्यालये प्रवेशोऽपि दुर्लभः । साम्प्रतं गच्छावः आवाम्, नमस्ते ।

देवेन्द्रः नमस्ते सुरेन्द्र, गच्छावः, पुनर्मिलनाय ।

शब्दार्थ

प्रतिशताधिक्यात्	अधिक प्रतिशत होने से ।
भारतीयप्राशासनिकसेवापरीक्षायाम्	आई० ए० एस० परीक्षा में ।
मन्त्रालये	मिनिस्ट्री में ।
सुहृद्	मित्र ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दीजिए—
   (क) अस्मिन् पाठे कयोः वार्तालापः वर्तते ?
   (ख) सुरेन्द्रः कस्मिन् विद्यालये प्रवेशं लब्धवान् ?
   (ग) देवेन्द्रः कस्यां कक्षायां पठति ?
   (घ) सुरेन्द्रस्य भ्राता कस्य विषयस्य प्रसादात् भारतीय-प्राशासनिक-परीक्षायां प्रथमं स्थानम् उपलब्धवान् ।
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   (क) द्वौ च पञ्चाशत् च मिलित्वा.....जायन्ते ।
   (ख) जनवरी-मार्च-जून्मासानां दिनसंख्या मिलित्वा..... जायते ।
   (ग) एकस्मिन् सप्ताहे.....दिनानि भवन्ति ।
   (घ) अष्टसु सप्ताहेषु.....दिनानि भवन्ति ।
3. (क) 90 से 100 तक की संख्याओं को संस्कृत में (अक्षरों में) लिखिए ।
   (ख) 50, 55, 56, 58, 75, 77, 79—इनको संस्कृत में क्या कहते हैं ?

त्रयोविंशः पाठः

जगद्गुरुः शङ्करः

अस्ति केरलेषु कालडीनामको ग्रामः। सः च पूर्णा (पेरियार्) नदीतीरे वर्तते। जगद्गुरुःश्रीशङ्कराचार्यः तस्मिन् ग्रामे जन्म अलभत। अस्य पिता शिवगुरुः माता आर्याम्बा चास्ताम्। शङ्करस्य जन्मनः प्रागेव पिता दिवंगतः। मातैव पुत्रस्य पालनम् अकरोत्। यथाकालमुपनीतः सः गुरुमुपागच्छत्। जन्मनैव प्रतिभासम्पन्नतया असौ कुलोचिताः विद्याः शीघ्रमेव अधीतवान्।

माता तं गृहस्थं कर्तुमैच्छत् । परन्तु मनसा वचसा कर्मणा च विरक्तः शङ्करः— 'मातः! सन्यासः मह्यं रोचते, तदर्थम् अनुमतिं प्रयच्छ' इति प्रार्थयत । माता पुत्रस्य प्रार्थनां न स्वीकृतवती । एकदा स्नातुं नदीं गतः शङ्करः नक्रेण गृहीतः उच्चैः आक्रोशत् । आक्रोशं श्रुत्वा नदीतीरं गता माता पुत्रं नक्रेण गृहीतमपश्यत् । शङ्करः मातरमवदत्— 'अम्ब, यदि सन्यासं ग्रहीतुं मामनुमंस्यसे तर्हि अहं नक्रात् मुक्तो भविष्यामि' इति । चेतसा अनिच्छन्ती अपि विवशा माता— 'वत्स, यथा तुभ्यं रोचते तथा कुरु' इति कष्टेन अकथयत् । सद्यः नक्रात् मुक्तः शङ्करः मातुः चरणयोः प्रणामम् अकरोत् । माता च तमनुगृहीतवती । 'मातः, तव स्मरणक्षणे एव त्वत्समीपमागमिष्यामि' इति प्रतिज्ञाय स गृहात् निरगच्छत् । देशाद्देशं पर्यटन् परिव्राजकैः सह सः काशीं प्राप्तवान् । तत्र सः गोविन्दपादाचार्येभ्यः वेदान्तविद्यामधीतवान् ।

अनन्तरं सः मुख्यानां उपनिषदां, व्यास-प्रणीतानां ब्रह्मसूत्राणां, श्रीमद्भगवद्गीतायाः च भाष्याणि कृतवान् । एतेन संस्कृतस्य महान् उपकारः अजायत ।

ततः सः आसेतुहिमाचलं स्वस्य सिद्धान्तस्य प्रचारमकरोत् । अत्रान्तरे बहवः जनाः तस्य शिष्याः अभवन् ।

अद्वैतसिद्धान्तस्य प्रचाराय परिरक्षणाय च श्रीशङ्करः द्वारकायां, बदर्यां, जगन्नाथपुर्यां शृङ्गेर्यां च चतुरः मठान् समस्थापयत् । तेषाम् अधिष्ठातारः अद्यापि शङ्कराचार्याः कथ्यन्ते ।

अन्तकाले मात्रा स्मृतः शङ्करः तत्समीपमागच्छत् । मातुः मरणानन्तरकर्तव्यं सर्वं परिसमाप्य स सर्वतः परिभ्रमन् जनान् च ज्ञानमुपदिशन् द्वात्रिंशे वयसि ब्रह्मभावम् उपगतः ।

श्रीशङ्कराचार्यैः विरचितानि बहूनि स्तोत्रकाव्यानि अपि सन्ति । तेषु च भजगोविन्दस्तोत्रम् अतीव लोकप्रियमस्ति ।

शब्दार्थ

भाष्याणि	व्याख्याएँ।
उपनीतः	जिसका उपनयन संस्कार हो गया है।
कुलोचिताः	कुल के अनुसार।
अनुगृहीतवती	कृपा की।
तव स्मरणक्षणे	जब तुम याद करोगी।
पर्यटन्	घूमता हुआ।
गोविन्दपादाचार्येभ्यः	गोविन्दपाद नामक आचार्य (गुरु) से।
उपनिषदाम्	उपनिषत् ग्रन्थों का।
आसेतुहिमाचलम्	सेतुबन्ध (रामेश्वर) से लेकर हिमाचल तक।
अधिष्ठातारः	अधिकारी।
ब्रह्मभावमुपगतः	ब्रह्म में लीन अर्थात् मुक्त हो गये।
वयसि	उम्र में।
स्तोत्रकाव्यानि	वे काव्य जिनमें देवताओं की स्तुतियाँ हों।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए—
   (क) कालडीनामकः ग्रामः कुत्र वर्तते ?
   (ख) श्रीशङ्करस्य पितरौ कौ आस्ताम् ?
   (ग) माता शङ्करं किं कर्त्तुमैच्छत् ?
   (घ) गीतायाः भाष्यं कः अलिखत् ?
2. निर्देश के अनुसार बदलिए—
   लभते को भविष्यत् काल में, रोचते को आज्ञार्थ में,
   लप्स्यते को वर्तमान में, सहते को भूतकाल में।
3. वाक्यों मे प्रयोग कीजिए—
   अलभत, अजायत, रोचते, वर्तते।
4. निम्नलिखित पदों के मूल शब्द लिखिए
   जन्म, वचसा, पयसः, वयसि।
5. शङ्कराचार्य पर पाँच वाक्य संस्कृत में लिखिए।

चतुर्विंशः पाठः

संस्कृतवाणी

सरला सरसा संस्कृतवाणी
जयति मङ्गला संस्कृतवाणी ।
वेदहिमाद्रेश्चिरं वहन्ती
विमला गङ्गा कल्याणी ॥ 1 ॥

अङ्गनां धाराभिरुदारा
उपनिषदामपि निहितविचारा ।
दर्शन-तन्त्र-पुराण-स्मृतितति
काव्य-कथा-नाटक-परिवारा ॥
सूक्ति-सुधा-पानं भुवि कुर्वन्
भवति सुखी सकलः प्राणी ॥ 2 ॥

अतुलो यस्याः शब्दागारः
शास्त्राणां विपुलो विस्तारः ।
नीचैरुच्चैरभितः परितः
शुद्धा, क्वापि न तत्र विकारः ॥
चिन्तन-मनन-निदिध्यासनतो
विज्ञानानां निर्माणी ॥ 3 ॥

ज्ञानं मानवतायाः वितरति,
विश्वप्रेम दिशन्ती विहरति ।
समता-ममता-समादराणां
भावः प्रतिजन-हृदयं प्रसरति ।।
वन्दे तां संयोज्य भक्तितो
विनतशिराः स्वीयौ पाणी ।। 4 ।।
जयति मङ्गला संस्कृतवाणी ।

शब्दार्थ

मङ्गला	मङ्गलकारिणी ।
वेदहिमाद्रेः	वेदरूपी हिमालय से ।
अङ्गानाम्	शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्यौतिष नामक वेद के छः अङ्गों की ।
दर्शन	छः दर्शन—सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त, न्याय, वैशेषिक ।
तन्त्र	साधना का एक प्रकार जिसका अपना शास्त्र है ।
पुराण	अठारह पुराण प्रसिद्ध हैं ।
स्मृति	धर्मशास्त्र ।
सूक्ति-सुधा	कवियों की ऐसी उक्तियाँ जो शाश्वतसत्य को बताने से अमर हैं ।
नीचै ··· शुद्धा	यहाँ नीचे ऊँचे आदि केवल कहने का ढंग है जिसका आशय इतना है कि हर प्रकार से शुद्ध ।

दिशन्ती	दिग्दर्शन करती हुई।
विनतशिराः	सिर झुकाकर, नतमस्तक होकर।
स्वीयौ पाणी	अपने दोनों हाथों को।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) संस्कृत वाणी कीदृशी वर्तते ?

(ख) अङ्गानां धाराभिः इत्यनेन कवेः किं तात्पर्यम् ?

(ग) संस्कृतवाण्याः परिवारे के के आगच्छन्ति ?

(घ) वेदानाम् अङ्गानि कानि सन्ति ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—

(क) वेदहिमाद्रेश्चिरं वहन्ती।

(ख) अतुलो यस्याः शब्दागारः।

(ग) विश्वप्रेम दिशन्ती विहरति।

परिशिष्टम्

शब्द-कोशः

स्वर

अकल्पयत्	तैयारी की। (कल्प्+लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अकाट्यानि	जिन्हें काटा न जा सके, जिन्हें गलत न सिद्ध किया जा सके।
अङ्काय स्पृहयति	गोद में बैठने के लिये उत्सुक। (स्पृह के योग में अङ्काय में चतुर्थी विभक्ति)
अङ्गराज	कर्ण (अंगदेश का राजा)।
अग्रिमायां निशायाम्	अगली रात में।
अग्रेसरः	आगे-आगे चलने वाला, नेता।
अचिरात्	शीघ्र ही।
अतिपरिमितम्	सीमित।
अद्वैतसिद्धान्तस्य	दर्शन शास्त्र का एक सिद्धान्त, जिसमें ब्रह्म को ही एकमात्र सत्ता माना गया है।
अधिकोत्पादनक्षमः	अधिक पैदा करने में समर्थ।
अधिष्ठातारः	स्वामी, अधीश।
अधिष्ठितः	विराजमान। (अधि+स्था+क्त प्रत्यय)
अधीत्य	पढ़कर (अधि+ईङ्+क्त्वा→ल्यप्)
अनवरतम्	निरन्तर। (अव्यय)
अनुगृहीतवती	अनुग्रह किया, कृपा की। (अनु+ग्रह्+क्तवतु+ङीष्)
अनुभवामः	अनुभव करते हैं।
अनुसृत्य	अनुसरण करके। (अनु+सृ+क्त्वा→ल्यप्)

अन्यथा	अलावा, नहीं तो।
अपगता	समाप्त, नष्ट, दूर हो गई।(अप+गम्+क्त+टाप्)
अपरत्र	अन्य स्थान पर। (अव्यय)
अपरिमितस्वर्णमुद्राभिः	सोने के असंख्य सिक्कों से।
अपर्याप्तम्	असीमित, अत्यधिक, बहुत ज्यादा।
अपहाय	छोड़कर। (अप+हा+क्त्वा→ल्यप्)
अपहृतवान्	छीन लिया। (अप+हृ+क्तवतु)
अप्रत्ययम्	अविश्वसनीय, अविश्वासी। (चेतः का विशेषण)
अपाकरोति	दूर करती है, निवारण करती है। (अप+आ+कृ +लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अभितः	दोनों ओर। (अव्यय)
अभिरतः	संलग्न, लगा हुआ, लीन।
अभीष्टम्	इच्छानुकूल।
अभ्यनन्दत	अभिनन्दन किया।
अभ्यर्च्य	पूजा करके। (अभि+अर्च्+क्त्वा→ल्यप्)
अभ्युत्थानम्	उत्कर्ष, उत्थान, उन्नति, बढ़ावा।
अमुत्र	परलोक में। (अव्यय)
अयच्छम्	दिया, दे दिया। (दा (यच्छ्)+लङ्, उत्तमपुरुष, एकवचन)
अर्यमा	सूर्य, पितरों के प्रधान, वैदिक देवता। (अर्यमन्, प्रथमा, एकवचन)
अलङ्करोति	सुशोभित कर रहा है।
अलं वारयितुम्	मना करने की आवश्यकता नहीं है।
अल्पवयस्कोऽपि	छोटी उम्र का होते हुए भी।
अवगच्छन्ति	समझते हैं। (अव+गम्+लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)
अवतु	रक्षा करें। (अव्+लोट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अवरुद्धः	बन्द है, रुक गया।
अवादीत्	बोला, कहा। (वद्+लुङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अवाप्नुवन्	प्राप्त किये, पाये। (अव+आप्+लङ्, प्रथमपुरुष बहुवचन)

अविहा	हाय, नहीं नहीं। (अव्यय) दु:ख के साथ मना करने के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला अव्यय, जो एक साथ दो बार प्रयुक्त होता है।
अवेक्षस्व	देखो, विचार करो, ठीक ढंग से परखो। (अव+ईक्ष्, लोट्, मध्यम पु०, एकवचन)
अश्नुते	उपभोग करता है, भोगता है। (अश्+लट्, आत्मनेपद, प्रथम पुरुष, एकवचन)
असंवृताङ्गान्	बिना ढके हुए अङ्गवालों को।
असाध्यम्	असम्भव, सिद्ध न होने योग्य।
आक्रान्तः	जिस पर हमला कर दिया गया, जिसे घेर लिया गया। (आ+क्रम्+क्त)
आक्रोशत्	चिल्लाया, जोर से बोला। (आङ्+क्रुश्+लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
आत्मनि निष्ठा	आत्मविश्वास।
आदर्शभूतः	अनुकरणीय।
आनयेयम्	लाऊँ। (आ+नी+विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन)
आनीताः	लाये गये हैं। (आ+नी+क्त)
आन्दोलिताः	हिलाई जाती हुई।
आपदर्थे	विपत्ति के लिए।
आपरितोषाद्	पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होने तक।
आराधनम्	पूजा।
आराधय	आराधना करो, निवेदन करो, प्रार्थना करो।
आरामाः	बाग-बगीचे।
आरोढुम्	चढ़ने के लिए। (आङ् उपसर्ग, रुह् धातु, तुमुन् प्रत्यय)
आरोहामि	चढ़ता हूँ, चढ़ लूँगा। (आ+रुह्+लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन)
आवृताः	ढके हुए। (आ+वृ+क्त+टाप्)
आश्रयणीयाः	आश्रय लेने योग्य। (आ+श्रि+अनीयर्)
आश्वासयन्	तसल्ली देते हुए, ढाढस बंधाते हुए। (आ+श्वस्+णिच्+शतृ)

इक्ष्वाकुनाथम्	रामचन्द्र को।
इतीदृशानि	इस प्रकार के, ऐसे। (इति+ईदृशानि)
इन्द्रः	देवताओं का राजा, वर्षा का देवता।
इयतीः	इतनी।
इषवः	बाण। (बहुवचन)
इह	यहाँ, इस लोक में। (अव्यय)
ईश्वरसम्मतः	ईश्वर से सम्मत, ईश्वरानुमोदित।
उच्चैः	जोर से (अव्यय)
उच्छिन्नम्	उधड़ी हुई। (उत्+छिद्+क्त, नपुं)
उत्कण्ठिते	उत्सुक। (द्विवचन)
उत्तरोदाहरणाय	उत्तर के उदाहरण के रूप में देने के लिए।
उत्थाप्य	उठाकर। (उत्+स्था+णिच्+क्त्वा→ल्यप्)
उत्पाट्य	उखाड़कर।
उन्मूलनीयम्	उखाड़ने योग्य, दूर करने योग्य।
उन्मूलिका	उखाड़ने वाली।
उपगताः	आ पहुँची, पड़ गई या पड़ी। (उप+गम्+क्त)
उपगम्य	पास जाकर। (उप+गम्+क्त्वा→ल्यप्)
उपनिषदाम्	उपनिषदों की।
उपनीतः	उपनयन संस्कार कर दिया।(उप+नी+क्त प्रत्यय
उपास्थापयत्	प्रस्तुत कर दिया, ला खड़ा किया। (उप+आ+स्था+णिच्+लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन)
उरुक्रमः	जिन्होंने लम्बे डग भरे थे, पराक्रमी। (विष्णु का विशेषण, विष्णु ने वामनावतार में सारी पृथ्वी और आकाश को तीन डगों में ही माप लिया था)
ऋतम्	शाश्वत नियम, निश्चित प्राकृतिक नियम।
ऋद्धिं गताः	सम्पन्न हो गये, उन्नति को प्राप्त किया।
एकदा	किसी समय, एक समय।

एकादशवर्षदेशीयेन	ग्यारह वर्षीय (के द्वारा)
ऐश्वर्येण	प्रभाव से, प्रभुता से।
औदार्येण	उदारतापूर्वक, खुले दिल से।

कवर्ग

कतिपय	कुछ।
कथा	गद्यमयी रचना की एक विधा।
कनकम्	स्वर्ण, सोना।
कनीयसी	छोटी, कनिष्ठा।
कमनीयानि	सुन्दर, मनोहर।
करवाणि	करूँ। (कृ+लोट्, उत्तम पु०, एकवचन)
कर्तव्यपरायणा	कर्तव्य के प्रति निष्ठा रखने वाली, क्या करना चाहिए—इसके लिए सचेत।
कतिचित्	कुछ।
कर्मकरैः	मजदूरों के द्वारा।
कलाविद्भिः	साहित्य संगीत आदि कलाओं को जानने वालों के द्वारा।
कलुषिते मनसि	पापी मन में।
कल्याणी	कल्याण करने वाली, हितकारिणी।
कवचम्	कवच, जो युद्ध के समय शरीर—विशेष कर वक्ष—की रक्षा के लिए पहना जाता है।
काचित्	कोई। (का+चित्)
कस्मै रोचन्ते	किसे अच्छे लगते हैं, किसे चाहिए। (यहाँ पर रुच् धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग है)
कामः	कामना, इच्छा, अभिलाषा।
कामधेनुः	समृद्धि की गौ, सब इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय। (यहाँ प्रसंगानुसार अधिक अंक प्राप्ति का भाव है)
काममोहितम्	काम से पीड़ित।
कारुण्यस्य	करुणा का।

कालपर्ययात्	समय के बदलने पर, समय के प्रतिकूल होने पर।
काष्ठपीठेन	सुहागा (पाटे) के द्वारा।
किं बहुना	बहुत क्या कहा जाय।
कुतः	कहाँ से, क्यों।
कुर्वाणा	करती हुई।
कुल्याः	छोटी-छोटी नहरें।
कृपणः	कंजूस।
कृषीवलाः	किसान, खेती से जीवन-यापन करने वाले।
कृष्टानि	जोते हुए।
केचित्	कोई, कुछ।
केदाराः	खेत। (बहुवचन)
केशच्छेदम्	बाल काटना।
कोषागारम्	खजाना।
कौन्तेय	कुन्ती पुत्र (अर्जुन)।
क्रेतुम्	खरीदने के लिए। (क्री+तुमुन्)
क्रौञ्चः	सारस जाति का पक्षी।
क्वाऽपि	कहीं भी।
क्षिपन्	आक्षेप करते हुए, आरोप लगाते हुए।
गवाक्षद्वारा	खिड़की से।
गाथा	वर्णन, घटना।
गुटिकावृष्टिः	गोलियों की वर्षा।
गुणानुरागिभिः	अच्छे गुणों से स्नेह करने वाले के द्वारा।
गुह्यम्	गोपनीय।
गृहाणि परितः	घरों के चारों ओर। (परितः के योग में गृह शब्द में द्वितीया विभक्ति)
गोचारणभूमिः	पशुओं के चरने के लिए छोड़ी गई भूमि, गोचर।
गौराङ्गैः	अंग्रेजों के द्वारा।
ग्लानिः	खेद, अप्रसन्नता, दुःख।
घोषितवान्	घोषित किया। (घुष्+क्तवतु)

चवर्ग

चक्षुषः	आँख के।
चञ्चरीकाः	भौंरे।
चतुरः	चार (पुरुषों) को। (चतुर् शब्द का द्वितीया बहुवचन)
चतुर्दशकोटीः	चौदह करोड़।
चत्वारः	चार। (चतुर् शब्द का प्रथमा बहुवचन)
चराचरम्	सजीव और निर्जीव। (चर—मनुष्य, पशु पक्षी आदि प्राणी, अचर—वृक्ष, पर्वत, नगर आदि)
चलम्	चंचल।
चलिता	अस्थिर, चंचल। (जो एक जगह टिकती नहीं है)
चिरम्	देर तक, देर से। (अव्यय)
चिन्तन-मनन-निदिध्यासनतः	(जो संस्कृत वाणी) विषयों के चिन्तन विचार-विमर्श एवं बार-बार अभ्यास करने से।
चेतः	चित्त, मन, हृदय को।
छिन्नमूला	कटी हुई जड़वाली।
जटिलानाम	कठिन। (षष्ठी, बहुवचन)
जन्मनैव	जन्म से ही। (जन्मना+एव)
जलमन्तरा	पानी के बिना। (अन्तरा के योग में द्वितीया विभक्ति)
जलस्थानगतम्	जलाशय में पहुँचा हुआ।
जलोपप्लवैः	बाढ़ों के कारण।
जाड्यम्	बुद्धि की मन्दता, जड़ता।
जितेन्द्रियः	जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, संयमी।
ज्ञातवन्तः	जानते थे, जानने लगे। (ज्ञा+क्तवतु)
ज्यायसी	बढ़ कर, बड़ी।

तवर्ग

तडागः	सरोवर, तालाब ।
ततः प्रभृति	तब से लेकर ।
तति	पंक्ति, समूह ।
तथ्यानि	विषय वस्तु, घटना ।
तवभवतः	आपके । (यह पद किसी आदरणीय व्यक्ति के लिए, जो अनुपस्थित हो, प्रयुक्त होता है)
तदानीम्	तब, उस समय (अव्यय) ।
तदायः	उसका, उस से सम्बन्धित ।
तनोति	फैलाती है । (तन् + लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
तन्त्र	कार्य में शीघ्र सिद्धि के लिए विकसित रहस्यात्मक विद्या का नाम तंत्र है । यह वैदिक, शैव, आगम, जैन एवं बौद्ध सम्बन्धी पाँच प्रकार का होता है ।
तपसे	तपस्या के लिए ।
तमसा	यमुना में मिलने वाली एक नदी का नाम जो प्रयाग के दक्षिण में बहती है । वाल्मीकि का आश्रम इसी नदी के किनारे पर था ।
तादृशः	ऐसा ।
तावत्	तब तक ।
तूष्णीकः	चुप, चुप बैठा, मौन ।
धानः	धारण करता हुआ । (धा + शानच्)
दर्शितवती	दिखाई ।
दाक्षिण्यम्	उदारता, अनुकूलता, पटुता ।
दातव्यम्	दिया जाना चाहिए, देना चाहिए । (दा + तव्यत्)
दाराः	स्त्री, पत्नी ।
दाहकता	जलन ।
दिवंगतः	स्वर्ग चला गया, मर गया ।
दिशति	प्रदान करती है, देती है । (दिश् + लट्, प्रथमपुरुष एकवचन)
दुराचारिभ्यः	बुरे आचरण वालों से ।

दीर्घं निश्वस्य	लम्बी साँस ले कर।
देवमातृकाः	जिस देश में देव ही माता की तरह, वर्षा से सींचे जाने वाले, जहाँ बादलों के बरसने से ही सिंचाई हो—ऐसे प्रदेश।
द्रवीभूतः	पिघल गये, द्रवित हो गए, जिन का मन करुणा से आर्द्र हो गया हो।
धन्यः	सौभाग्यशाली, सफल, कृतकृत्य।
धान्यक्षुपान्	धान के पौधे को।
धियः	बुद्धि की।
धीराः	विवेकी, सही और गलत का निर्णय लेने में समर्थ।
धेनवः	गायें।
नक्तंदिवम्	रात-दिन।
न जहाति	परित्यक्त नहीं करती, छोड़ती नहीं। (हा+लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन)
नदीमातृकाः	जिस देश में नदी ही माता की तरह है, नदी से सींचे जाने वाले, जहाँ नदी से सिंचाई की जाती हो—ऐसे प्रदेश।
न बाधते	पीड़ित नहीं करता है, दुःखी नहीं रखता है। (बाध्+लट्, आत्मने पद, प्रथम पुरुष, एकवचन।)
नवपल्लवाः	नए-नए पत्ते।
न शक्ष्यति	नहीं समर्थ हो सकेगा, नहीं प्राप्त कर पायेगा। (शक्+लृट्, प्रथमपुरुष, एकवचन)
नातिदूरे	पास में ही, समीप में ही।
निगृहीतः	पकड़ लिया गया। (नि+ग्रह्+क्त)
निखिलः	सम्पूर्ण।
निघ्नन्ति	मार देते हैं। (नि+हन्+लट्, प्रथमपुरुष, बहुवचन)
नितराम्	बहुत अधिक (अव्यय)।
निद्रालुः	सोने की इच्छा वाला, निद्रायुक्त।
निधाय	रख कर। (नि+धा+क्त्वा—ल्यप्)
निधिम्	खजाने को।

निरगच्छत्	निकल गया । (निर्+गम+लङ्, प्रथमपुरुष, एकवचन)
निर्गतः	निकल पड़ा, प्रकट हो गया ।
निवर्तयितुम्	हटाने के लिए । (निर्+वृत्+णिच्+तुमुन्)
निर्वस्त्रम्	वस्त्रहीन, नंगा ।
निशाचरः	राक्षस ।
निशिताः	पैने, तीखे ।
निषादः	जंगली जाति, यहाँ बहेलिये के लिए प्रयुक्त हुआ है ।
निष्णाताः	कुशल, दक्ष, निपुण ।
निसर्गरमणीयम्	स्वभाव से ही सुन्दर, स्वतः सुन्दर ।
नीचैरुच्चैरभितःपरितः	नीचे, ऊपर, चारों और, सब और से । (ये चारों शब्द अव्यय हैं)
नीतिनिपुणाः	नीति में दक्ष, व्यवहार-कुशल ।
नीयमानम्	ले जाई जाती हुई को । (नी+कर्मवाच्य+शानच्, द्वितीया, एकवचन)
नृत्यन्ती	नाचती हुई । (नृत्+शतृ+ङीप्)
नृशंसता	निर्दयता, अत्याचार, क्रूरता ।
नो (नः)	अस्माकम्, अस्मभ्यम्, अस्मान्=हमारा, हमारे लिए ।षष्ठी, चतुर्थी और द्वितीया के बहुवचन में अस्मद् शब्द का वैकल्पिक रूप जो वाक्य के आदि में प्रयुक्त नहीं होता है ।
नो (न+उ)	नहीं । (अव्यय)
न्यवारयत्	रोका । (नि+वृ+णिच्+लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
न्यस्तानि	रखे हुए । (नि+अस्+क्त)
न्याय्यात्पथः	नीति के मार्ग से, उचित रास्ते से ।

पवर्ग

पङ्गुः	लंगड़ा ।
पञ्चदशवर्षकल्पम्	पन्द्रह वर्षीय को, पन्द्रह साल के बालक को ।
पञ्जरबद्धः	पिंजड़े में बंद ।
पटवः	कुशल ।
पतिपरायणा	पतिव्रता, पति की सेवा में समर्पित ।
पदम्	कदम, पग ।
पराभवम्	पराजय को ।
परावर्तितुम्	लौटने के लिए । (परा+आ+वृत्+तुमुन्)
परितः	चारों ओर । (अव्यय)
परित्यज्य	छोड़ कर, त्याग करके । (परि+त्यज्+क्त्वा—ल्यप्)
परिव्राजकैः	संन्यासियों के साथ ।
परिसरे	प्रांगण में, अहाते में ।
परीक्ष्य	जाँच कर, परख कर । (परि+ईक्ष्+क्त्वा+ल्यप्)
पर्जन्यः	बादल ।
पर्यङ्के	पलंग पर ।
पात्रेभ्यः	दान के योग्य व्यक्तियों के लिए ।
पारावारः	समुद्र ।
पिकः	कोयल ।
पिपीलिकाः	चीटियाँ ।
पुत्रेण साकम्	पुत्र के साथ । (साकम् शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है)
पुंसाम्	पुरुषों का, लोगों का ।
पुरस्कृत्य	पुरस्कार देकर, इनाम देकर, आगे करके । (पुरस्+कृ+क्त्वा+ल्यप्)
पुरस्तात्	आगे, समक्ष, सामने । (अव्यय)
पुरा	पहले । (काल वाचक अव्यय)
पुराण	अठारह पुराण जिन्हें मूलतः वेदव्यास की रचना मानते हैं ।

पुष्पभाजनम्	फूलों की टोकरी, या पत्तों से बना दोना।
पूताः	पवित्र।
पूर्वाह्णे	दिन में दोपहर के पहले।
पेयानि	पेय, पीने लायक। (पा+यत्)
प्रकम्पमानः	लड़खड़ाता हुआ, काँपता हुआ। (प्र+कम्प्+शानच्)
प्रकृत्या मनोहरः	स्वतः सुन्दर, जो अपने आप में आकर्षक हो।
प्रक्षाल्य	धोकर।
प्रतिवेत्रघातम्	बेंत के प्रत्येक प्रहार पर।
प्रतिशोधाय	प्रतिशोध के लिए, बदला लेने के लिए।
प्रत्यक्षम्	इन्द्रिय गोचर अर्थात् साक्षात्। (वायु के लिए प्रयुक्त)
प्रदास्ये	दूँगा। (प्र+दा+लृट्, आत्मने पद, उत्तमपुरुष, एकवचन)
प्रपातजलेन	झरने के जल से।
प्रभा	कान्ति, तेज, प्रकाश।
प्रयोगविज्ञानम्	प्रयोग का विज्ञान, कौन सी बात कहाँ और कैसे कहनी चाहिए—इसका ज्ञान।
प्रवृत्तिः	कार्य में संलग्न होने की भावना या इच्छा।
प्रशंसन्तः	प्रशंसा करते हुए। (प्र+शंस्+शतृ)
प्रशंसामर्हति	प्रशंसा करने योग्य है, तारीफ़ के लायक है।
प्रशस्तम्	प्रसिद्ध, बाधारहित।
प्रसन्ना इव	प्रसन्न सी।
प्रसरः	प्रसार, फैलाव।
प्रसादयति	प्रसन्न करती है, प्रसन्न रखती है।
प्रसूः	उत्पत्ति स्थल, माता।
प्रस्तुतवन्तौ	प्रस्तुत किए। (प्र+स्तु+क्तवतु, प्रथमा विभक्ति, द्विवचन)
प्रस्तौति स्म	पेश करते थे। (प्र+स्तु+लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
प्रहृष्टः	प्रसन्न, गद्गद्। (प्र+हृष्+क्त)

प्राणिनः	प्राण धारण करने वालों को, जीवधारियों को।
प्रार्थयत	प्रार्थना की। (प्र+अर्थ्+लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद)
प्रार्थितः	प्रार्थना की गई, पूछा गया। (प्र+अर्थ्+क्त)
प्रीणयति	प्रसन्न करती है।
प्रीतिपात्रम्	प्रेमभाजन।
प्रेत्य	अन्य लोक में जाकर या जाने पर (प्र+इ+क्त्वा+ल्यप्)
प्लावयन्त्यः	लबालब भरते हुए, पूरित करते हुए।
बत	अवश्य, निश्चित।
बद्धमूला	जड़ों वाले, रूढ़।
बलवदपि	बहुत अधिक, पूर्ण रूप से।
बलीवर्दौ	बैलों की जोड़ी।
बहिष्काराय	बहिष्कार के लिए।
बहुविधा	अनेक प्रकार की।
बीजक्षेत्रम्	धान की क्यारी।
बुद्धिवैभवम्	बुद्धि-कौशल, बुद्धि की अधिकता।
बृहस्पतिः	देवों के स्वामी। (इन्द्र का विशेषण) देवताओं के गुरु का नाम बृहस्पति है। बृहस्पति नाम का एक ग्रह भी है।
ब्रह्मणे	निखिल ब्रह्माण्ड के अधिष्ठाता परमात्मा को। (नमः के योग में चतुर्थी विभक्ति)
ब्रह्मभावम्	ब्रह्म का जो रूप है, उसी रूप को, अर्थात् निर्गुण निर्विकार एवं नित्य शुद्ध भाव को।
ब्रह्मसूत्राणाम्	महर्षि व्यास के द्वारा लिखे गये, ब्रह्म-सूत्रों का।
भक्तवत्सलम्	भक्तों के प्यारे, भक्तों के प्रति सहृदय।
भवते	आप को, आपके लिए।
भवसागरस्य	संसार रूपी सागर का, समुद्र के समान संसार का।
भव्यः	उच्च कोटि का, आलीशान।
भस्म	राख।
भान्ति	शोभायमान हैं, सुशोभित हो रहे हैं। (भा+लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)

भारतीयप्राशासनिक-सेवापरीक्षायाम्	आई० ए० एस० परीक्षा में।
भाविनि जन्मनि	अगले जन्म में।
भाषितवान्	कहा। (भाष्+क्तवतु)
भाष्याणि	टीकाएँ।
भास्करेण	सूर्य के द्वारा।
भीषणाकारम्	जिस का स्वरूप डरावना हो।
भुशुण्डीगुटिका	बन्दूक की गोली।
भूयः	पुनः। (अव्यय)
भूयांसम्	अत्यधिक।
भूरि	बहुत। (अव्यय)
भेतव्यम्	डरना चाहिए। (भी+तव्यत्) (न के साथ मिलकर इसका अर्थ होता है—डरने की कोई बात नहीं)
मच्छिरः	अपना सिर। (मत्+शिरः)
मञ्जर्यः	बौर के गुच्छे।
मधूनि	शहद। (बहुवचन)
मनाक्	अल्पमात्रा में, जरा, थोड़ा सा। (अव्यय)
मनोगतम्	मन की भावना।
मत्तः	मस्त, मतवाला, पागल, नशे में, उन्माद से युक्त। (मद्+क्त)
महत्तराम्	बड़ी। (महत्+तरप्)
महर्षयः	ऋषियों में बड़े या अग्रगण्य।
महाव्याधिना	असाध्य रोगों से, तपेदिक, माहामारी, यक्ष्मा, 'केन्सर' आदि।
महिमानम्	महिमा को, महत्ता को।
मानोन्नतिम्	सम्मान में क्रमिक वृद्धि, इज्ज़त में बढ़ौती।
मायाविनी	छलने वाली, ठगने वाली।
मायाविषु	मायावी लोगों के साथ, छली, कपटी लोगों के साथ। (सप्तमी, बहुवचन)

मायिनः	मायावी, प्रपंची। (माया+इन्, प्रथमा बहुवचन)
मित्रः	सूर्य, आदित्य, सविता। (मित्रम् नपुंसकलिंग होने पर इस शब्द का अर्थ सुहृत्, सखा, दोस्त होता है)
मुकुलितानि	आधा खिले हुए, जिनमें कलियाँ निकल गई हों।
मुकुलीकृत्य	हाथ जोड़कर, हाथों को मिलाकर कली की तरह बनाकर।
मुक्तिं श्रिताः	स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।
मुख्यहेतुभूतं	प्रमुख कारण को, जो उसका खास कारण रहा हो उसे।
मुदम्	प्रसन्नता को।
मुहूर्तकम्	निमिष, क्षण, दो घड़ी या अड़तालीस मिनट का समय। (यहाँ पर इसका प्रयोग कुछ समय तक के अर्थ में हुआ है (मुहूर्त+कन्)
मूकः	गूँगा।
मूढधियः	मंद बुद्धि वाले, जड़, मूर्ख।
मूर्च्छिता	बेहोश हुई।
मृदुत्वम्	सरलता, कोमलता।
मृदुलः	कोमल, सुकुमार।
मेधाविनः	बुद्धिमान।
मेघाच्छन्नम्	बादलों से घिरा हुआ।

अवर्गीय

यतेथाः	प्रयत्न करो।
यथाशक्ति	अपने सामर्थ्य के अनुसार।
यथेष्टम्	इच्छानुसार, पर्याप्त।
यदृच्छया	संयोग वश।
यातनादायिनी	कष्ट देने वाली।
यापय	बिताओ। (या+णिच्+लोट्, मध्यम पुरुष, एकवचन)

यावन्मिलदलिमालः रसालः	जब तक मंडराती हुई (मिलती हुई) भौंरों की पंक्तिवाला आम।
युगान्तरे	अन्य युग में, बहुत देर के बाद।
योजयते	लगाती है, प्रेरित करती है। (युज्+णिच्+लट्, आत्मने पद, प्रथम पुरुष, एकवचन)
रक्ष्या	रक्षा करने योग्य।
रचयित्वा	बनाकर, निर्माण करके। (रच्+क्त्वा)
रथ्या	गली, सड़क।
रमयति	प्रसन्न करती है।
रम्भापत्ररचितम्	केले के पत्तों से बनी हुई।
रश्मिभिः	किरणों द्वारा।
रसालः	आम का पेड़।
रामायणी	रामचरित सम्बन्धी। (कथा)
रुचितम्	अच्छा, रुचिकर, वाक्य का अर्थ होता है—यदि आप चाहें। (रुच्+क्त)
रोगाक्रान्तौ	रोग से पीड़ित, बीमार। (द्विवचन)
रोचते	अच्छा लगता है।
लप्स्यते	प्राप्त करेगा, पायेगा। (लभ्+लृट्, आत्मनेपद, प्रथम पुरुष, एकवचन)
लब्धचेतना	होश प्राप्त करके।
लब्ध्वा	प्राप्त करके, पाकर। (लभ्+क्त्वा)
लोकाः	लोग, आम जनता।
लोकोत्तराणाम्	महापुरुषों के, असाधारण जनों के।
लौकिकी	लोक में प्रसिद्ध, लोगों में प्रचलित।
वक्तारम्	वक्ता अर्थात् स्तुति करने वाले को।
वनान्तरे	दूसरे वन में।
वपन्ति	बोते हैं। (वप्+लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)
वप्स्यन्ति	बोयेंगे।
वरुणः	जल के अधिष्ठातृ देवता, पश्चिम दिशा का देवता।
वर्तते	है, विद्यमान है।

वसतिः	गाँव।
वहन्ती	उठाये हुए, ढोती हुई, लिये हुए। (वह्+शतृ+ङीप्)
वाचनाय	पढ़ने के लिए।
वाजिनः	घोड़े, घोड़ों को।
वाटिकासु	बगीचों में।
वारणानाम्	हाथियों के।
वारीणि	पानी। (बहुवचन)
विगर्हितम्	निन्दित, निन्दावाला, दोषपूर्ण।
विचिन्त्य	सोचकर। (वि+चिन्त्+क्त्वा→ल्यप्)
विज्ञाः	पण्डित, विद्वान् लोग।
विज्ञाय	जानकर, समझकर। (वि+ज्ञा+क्त्वा→ल्यप्)
विद्यावताम्	विद्यावालों का, विद्वानों का।
विधातव्यम्	किया जाए। (वि+धा+तव्यत्)
विधिः	ब्रह्मा, सृष्टि के देवता।
विधिशास्त्रविशारदौ	कानून को जानने वाले। (द्विवचन)
विधयः	करना चाहिए। (वि+धा+यत्)
विनतशिराः	झुके हुए मस्तक वाला, नम्रभाव से।
विन्दति	जानता है, पाता है। (विद्+लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
विपन्नम्	नष्ट भ्रष्ट, सम्पत्ति विहीन, दुःख का मारा हुआ। (वि+पद्+क्त)
विमाता	सौतेली माँ।
वियति	आकाश में। (वियत् शब्द का सप्तमी एकवचन)
विरम्य	रुक कर, ठहर कर, रहकर। (वि+रम्+क्त्वा→ल्यप्)
विलासः	क्रीडा, हाव भाव।
विलासम्	सौन्दर्य, रमणीयता।
विलीयते	नष्ट हो जाती है, समाप्त हो जाती है। (वि+ली+लट्, आत्मनेपद, प्रथम पुरुष, एकवचन)
विलोकयन्ती	देखती हुई, निहारती हुई। (वि+लोक्+शतृ+ङीप्)

विवदमानौ	विवाद करते हुए, बहस करते हुए, झगड़ते हुए। (वि+वद्+शानच्, द्वितीया द्विवचन)
विस्मयेन	आश्चर्यपूर्वक।
वेत्ता	जानने वाला।
वेत्रदण्डेनैनम्	इसे बेंत की छड़ी से। (वेत्रदण्डेन+एनम्)
वेदहिमाद्रेः	वेद रूपी हिमालय से।
वेदान्तविद्या	छः दर्शनों में अन्तिम दर्शन, वेद के अन्तिम ध्येय और शिक्षा देने वाला दर्शन।
वेषं धृत्वा	वेष धारण करके।
व्यसृजत्	विसर्जन किया, छोड़ दिया। (वि+सृज्+लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन)
व्याधेन विद्धम्	बहेलिये के द्वारा घायल। (विद्धम्=व्यध्+क्त)
वृत्तान्तम्	समाचार।
वृन्दम्	दल, समूह।
वृषभाः	बैल। (बहुवचन)
शक्नुवन्ति	सकते हैं। (शक्+लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)
शक्रः	इन्द्र।
शब्दागारः	शब्दराशि, शब्दकोश।
शम्	शुभ, मंगल, कल्याणकारी। (यहाँ विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस लिए इसका अर्थ शुभद, मंगलमय या कल्याणकारी होगा।)
शयालुः	सोया हुआ।
शय्यावलम्बिनौ	शय्या पर पड़े हुए। (द्विवचन)
शल्यराजः	शल्य, मद्रदेश का राजा।
शाश्वतीः समाः	अनन्त काल तक, शाश्वतीः शाश्वत से बना है, जिसका अर्थ है निरन्तर, समाः का अर्थ वर्ष है।
शीर्यते	विशीर्ण होती है, गलती है, नष्ट होती है।
शोकार्ताम्	शोक से पीड़ित, दुःखिनी (को)।
शोचनीया	चिन्तनीय।
श्रान्तेभ्यः पथिकेभ्यः	थके हुए मुसाफिरों के लिए।

श्रावयितुम्	सुनाने के लिए। (श्रु+णिच्+तुमुन्)
श्रीपरमेश्वरदर्शनाय	शिव के दर्शन के लिए।
श्रीमताम्	सम्पन्न लोगों को (का)।
श्रुतिगोचरः जातः	(आवाज़) कानों में पड़ी।
श्रुतेन	अध्ययन से, ज्ञान से।
श्रेष्ठः	प्रशंसनीय, सराहनीय।
श्रेष्ठी	सेठ, धनाढ्य।
श्रोत्रमार्गम्	कानों में।
श्लोकपादम्	श्लोक का चौथाई भाग, पद्य का एक चरण।
श्लोकबद्धा	पद्यमयी रचना।
श्वः	कल। (आने वाला दिन)
सङ्गच्छते	संगत होता है, सार्थक होता है। (सम्+गम्+लट्, आत्मनेपद, प्रथमपुरुष, एकवचन)
संसिद्धिम्	पूर्ण सफलता।
संलापः	बातचीत।
सम्वर्धयन्	बढ़ाता हुआ। (सम्+वृध्+शतृ)
सखरापि	कठोर भी, (खरेण सहिता) खर नामक राक्षस से युक्त।
सङ्कुलः	खचाखच भरा हुआ।
सञ्चितार्थः	इकट्ठा किया हुआ धन।
सदाचारिणः	अच्छे आचार वाले।
सदूषणापि	दोषों से युक्त, दूषण नामक राक्षस से युक्त।
सद्यः	तुरन्त, उसी समय।
सन्तः	सज्जन पुरुष, महात्मा लोग।
सन्तोषय	सन्तोष दो, सन्तुष्ट करो। (सम्+तुष्+णिच्+लोट्)
सन्मार्गः	श्रेष्ठमार्ग।
सन्निहितः	विराजमान, रखा हुआ। (सम्+नि+धा+क्त)
सन्मित्रलक्षणम्	अच्छे दोस्तों के चिह्न, अच्छे मित्र की विशेषताएँ, सच्चे मित्र की पहचान।

सभ्याः	सभासद्, दरबारी, सभा के सदस्य ।
समं पतन्ति	एक साथ गिरती हैं ।
समतोषयत्	सन्तुष्ट किया । (सम्+तुष्+लङ्)
समर्पणयोग्यम्	भेंट रूप में देने योग्य ।
समर्पितवान्	समर्पण किया । (सम्+ऋ+णिच् +क्तवतु)
समारब्धा	प्रारम्भ, शुरू । (सम्+आ+रभ्+क्त+आ)
समाविशतु	आगमन हो, आये, आना हो, मिले, प्राप्त हो । (सम्+आ+विश्+लोट्)
समीकरोति	बराबर करता है ।
समृद्धः	सम्पन्न, अपेक्षित सामग्री से भरपूर ।
सम्पन्नम्	परिपूर्ण, समृद्ध । (सम्+पद्+क्त)
सरस्सु	सरोवरों में, तालाबों में ।
सव्येन चरणेन	बाँयें पैर के द्वारा ।
सहकारम्	आम के पेड़ को ।
सहामहे	सहन करते हैं, बर्दाश्त करते हैं । (सह + लट्, उत्तम पुरुष, बहु०, आत्मनेपद)
साइमन्समितेः	साइमन नामक अंग्रेज की अध्यक्षता में गठित आयोग । (साइमन कमीशन)
साक्षिणी	गवाह । (स्त्रीलिङ्ग)
साक्षिणाम्	गवाहों के ।
साधु	सुन्दर, अच्छा, ठीक ।
साधुव्रतम्	अच्छा आचरण ।
सिन्धुः	सागर ।
सिंहासनम्	राजगद्दी ।
सीमानौ भूत्वा	सीमा बनकर या सीमा बनाते हुए ।
सुबद्धमूलाः	जिनकी जड़ें मजबूत हैं, मजबूत जड़ों वाले । (यह पादपाः का विशेषण है)
सुसिद्धिः	अच्छी सफलता, आसानी से मिलने वाली सफलता ।
सूनुः	पुत्र ।
सृजामि	जन्म लेता हूँ । रचता हूँ । (सृज्+लट्, उत्तम पुरुष, एकवचन)

सेतुः	पुल ।
सौकर्यम्	सुविधा, सहूलियत ।
सौरभाणाम्	सुगन्धियों का, खुशबुओं का ।
सौविध्यम्	सरलता, सुविधा ।
स्नुषाम्	पुत्रवधू को ।
स्मृति	स्मृतिग्रन्थ ।
स्वातन्त्र्य-यज्ञकुण्डे	स्वतंत्रता रूपी यज्ञ के कुण्ड में ।
स्वादूनि	रुचिकर, स्वादिष्ट ।
स्वीयौ	अपने दोनों ।
हुतम्	यज्ञ की आहुति के रूप में अग्नि में डाला गया, अर्थात् यज्ञ का फल, पुण्य । (हु+क्त)
हुतवान्	हवन कर दिया, आहुति दे दी । (हु+क्तवतु)
हे पाप !	हे दुरात्मन्, हे पापी ।
हेमन्तः	जाड़े की ऋतु, जो शिशिर के पहले और शरद् के बाद आती है ।
होरापर्यन्तम्	एक घण्टे तक ।
ह्यः	बीता हुआ कल ।

NIRANJAN
2021
10 May 2001

0703

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING